मई-२०१९ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई-२०१९

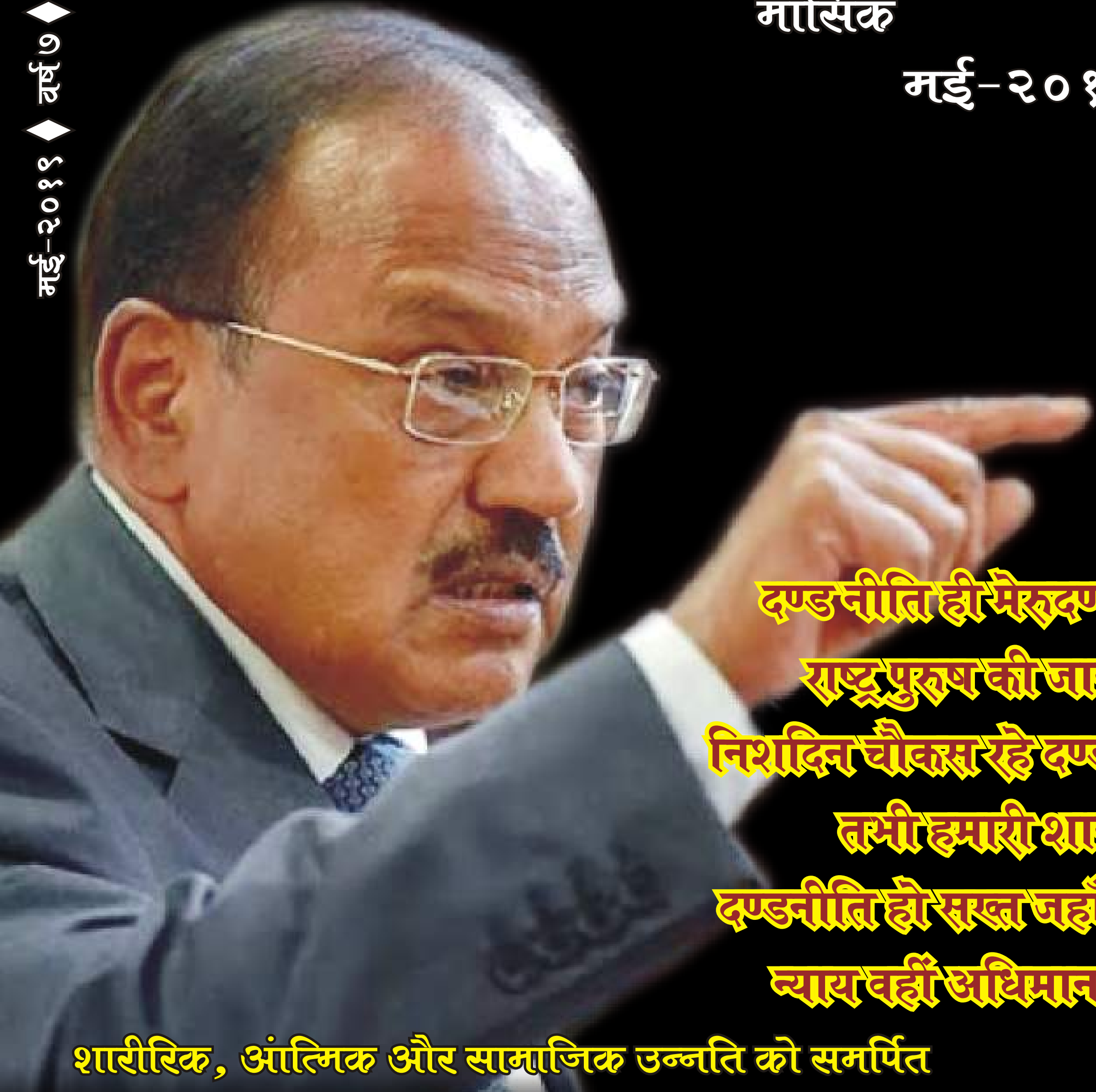

दण्ड नीति ही मेरुदण्ड है,
राष्ट्र पुरुष की जान है।
निशदिन चौकस रहे दण्डधर,
तभी हमारी शान है।
दण्डनीति हो सख्त जहाँ पर,
न्याय वहीं अधिमान है।।

शारीरिक, आंत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ 10 ८६

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
वैशाख शुक्ल तृतीया
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

०६

न्याय या अन्याय

११

मतदान एक पावन कर्तव्य

May - 2019

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
१३ Importance of Hawan
१६ माँ-बाप का दिल न दुखा
१८ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता
२० ताकि पछताना न पड़े
२१ सत्यार्थ प्रकाश पहेली
२२ सबकी उन्नति में अपनी उन्नति
२४ ईश्वर भक्ति से शक्ति
२८ परमाणु-विज्ञान एक समीक्षा
२९ फरिश्तों का फल
३० जीवन की सार्थकता

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - १२

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

कुटिलता और पाप

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।। - यजुर्वेद ४०/१६

''अगस्त्य''= पाप का संहार करने के लिये साधक प्रभु से आराधना करता है कि- हे अग्ने प्रभो! हमें रायेत्रऐश्वर्य प्राप्ति के लिए सुपथा नय=उत्तम मार्ग से ले चलिये। हम कभी भी कुमार्ग अर्थात् विपरीत रास्ते से धन कमाने में प्रवृत्त न हों। हे देव=दिव्य गुणों के पुंज प्रभो! आप हमारे विश्वानि= सब वयुनानि=कर्मों को जानते हैं। आप हमारे मनों में आने वाले सभी अशुभ विचारों को इसी समय अस्मत्=हमसे पृथक् कर दें। इसलिए प्रभो! हम निरन्तर आपका ही स्तवन करते हैं कि जिससे हम अशुभ की ओर झुकाव से स्वयं को बचा सकें।

प्रस्तुत मंत्र में वेदमाता ने प्रभु से कुटिलता और पाप से बचने की ''भौतिक और आत्मिक'' ऐश्वर्यों की प्रार्थना, याचना की है। ऐश्वर्य का अर्थ सुख व आनन्द से है, जिसे हम सभी चाहते भी हैं। भौतिक ऐश्वर्य केवल बाह्य सुख अर्थात् शारीरिक सुख से ही है जो आत्मा से प्राप्त होता है वह आत्मिक सुख कहाता है।

आत्मिक सुख=ऐश्वर्य केवल सुपथ पर चलकर धन सम्पादन करने से ही सम्भव है। 'प्रकृति' जो अनादि तत्व है सभी के कल्याण और सुख के लिए ही है। सो हमें प्रकृति का कभी भी उपहास नहीं करना चाहिए। उसके संसाधनों का हम आवश्यकता से अधिक कभी भी उपभोग न करें। अतः प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठते ही हम प्रभु से याचना/ प्रार्थना करें- 'अग्ने! नय सु-पथा राये अस्मान्, पद को गुनगुनावें। हम सुपथ पर चलते हुए ही दिव्य धनों का अर्जन करते हुए उसे अपने निज के व्यवहार में लावें और भूल कर भी कुपथ पर न चलें। देखो! इस चराचर जगत् में कोई भी पदार्थ हमारे साथ न आया था और न ही जाएगा। न धन शाश्वत है, न जन- क्यों हम इनके लिए पाप के भागी बनें? और प्रार्थना करेंः-

'प्रातः स्मरणीय' हे नाथ! सुपथ पर मुझे चलाना जी, हे नाथ! सुपथ पर मुझे चलाना जी।
कभी भूल से चलूं कुपथ पर, खींच मुझे पीछे लाना जी।
इस नश्वर धन-वैभव हेतु, कभी कुपथ पर भटक न जाऊँ जी।।
धन वैभव तो पाऊं, भगवन्! पर सुपथ से ही मैं पाऊँ जी।
धन-वैभव साथ न आया, यह साथ मेरे न जावे जी।।
चलना पड़े यहाँ से जिस दिन, काम न मेरे आवे जी।
क्यों मैं फिर इस धन हेतु, चल कुपथ पर, पाप कमाऊं जी।।
'अग्ने नय सुपथा राये'- क्यों न निरन्तर यह पद गाऊं जी।
हे नाथ! सुपथ पर मुझे चलाना जी, हे नाथ! सुपथ पर मुझे चलाना जी ।।

वयुनानि-वयुन नाम गति और चेष्टा का है। यहाँ जो कुछ है वह गतिशील है। सृष्टि में सभी लोक-लोकान्तर अनवरत गति कर रहे हैं। एक-एक अणु परमाणु निरन्तर गति कर रहा है। मनुष्य भी इसी प्रकार अपने विचारों और भावनाओं के स्रोत से गतिशील है, जिसे प्रभु जान रहा है। (क्योंकि वह- ईश्वर कण-कण में व्याप्त है) और हम प्रार्थना करते हैंः-

हे देव! तू हमारे समस्त क्रिया कलापों को जानने वाला है, हे नाथ! दूर रख हमसे 'कुटिलता और पाप को'

ये कुटिल भाव ही हम मनुष्यों को सुपथ से हटाकर कुपथ पर चलने के लिए मजबूर करते हैं। 'सश्रणोति-सपश्यति' वह सर्वत्र देख सुन रहा है। परन्तु जब हम स्वयं के व्यवहार में, दया, परोपकार, सत्य, करुणा, कृपा, सहजता, सहनशीलता, शालीनता और निर्भीकता आदि गुणों का समावेश कर दृढ़ धारणा से प्रभु की सत्ता को स्वीकारते हुए कि मैं हर वक्त प्रभु के

सामने हूँ या वह प्रभु सदा मेरे सामने है- वह मेरी दृष्टि में है- ओझल नहीं है, निश्चित मानें कि वही व्यक्ति इसकी कृपा का पात्र बनकर कुटिलता और पाप से दूर रहेगा- अन्य कोई नहीं।

नमऽउक्तिं विधेमः = नमन् और उक्ति अर्थात् प्रभु से आत्म निवेदन स्वीकारोक्ति। रात्रि सोने से पूर्व आत्म चिन्तन करें कि मुझ से जाने- अनजाने में आज कोई गलत काम तो नहीं हुआ या किसी से किसी भी सन्दर्भ में गलत व्यवहार तो नहीं हुआ। यदि हो गया हो तो तुरन्त प्रभु को साक्षी मानकर उसका पश्चाताप करें। 'हे देव! मुझे शक्ति दो कि मैं आगे से इस गलती का भागी न बनूँ' और जो पाप घटित हो गए हैं उनके फल को सहर्ष सहते हुए स्वयं पर नियन्त्रण करें और आगे इस वृत्ति से बचें तभी हम कह सकेंगे कि हमारे पापों की वृत्ति का भषण (नाश) हुआ और हम दिन प्रतिदिन कुटिलता और पाप से निवृत्त होते चले जायेंगे।

भूयो भूयः प्रभु के सम्मुख बार बार नमन् और निवेदन करते हुये सदा आगे बढ़ते चलें।

-जीवन लाल आर्य
अशोक विहार, दिल्ली।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्य, अहिंसा, दया-भाव
की महिमा है अपरम्पार।
जिसको इनका साथ मिले,
उसे पूजे यह संसार।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

आत्म निवेदन

न्याय या अन्याय

देश में इन दिनों चुनाव चल रहे हैं। इससे पूर्व कि हम अपनी बात रखें हम स्पष्ट करना चाहेंगे कि यह आलेख प्रत्यक्षतः कांग्रेस की न्याय योजना की ही आलोचना पाठकों को लगेगी परन्तु किसी भी राजनीतिक दल द्वारा इस प्रकार की मुफ्तखोरी को प्रोत्साहन देने के हम विरुद्ध हैं। क्योंकि न्याय ने सारे आयामों को पार कर लिया है अतः प्रस्तुत लेख केवल न्याय के विरुद्ध प्रतीत हो सकता है परन्तु किसी भी राजनीतिक दल के प्रति हमारी प्रतिबद्धता नहीं है।

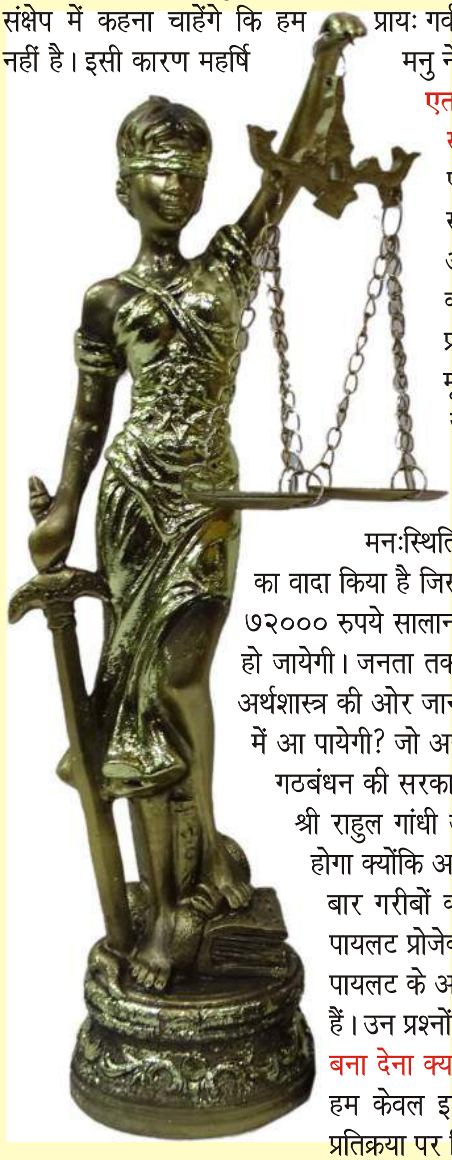

संक्षेप में कहना चाहेंगे कि हम प्रायः गर्व करते हैं कि हम विश्वगुरु के आसन पर विराजमान थे और इसमें असत्य भी नहीं है। इसी कारण महर्षि मनु ने कहा था-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनाI
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मानवाः II

पर यह बीते युग की कहानी हो गयी ऐसा लगता है। पुरुषार्थ, नैतिकता और स्वाभिमान हमारे भूषण होते थे जो अब तिरोहित ही हैं। समाजशास्त्रियों , आचार्यों तथा राज्य का यह कर्तव्य है कि वे इन गुणों को जनता में बनाए रखने का प्रयत्न करें। भारतीय संस्कृति की इसी विशेषता ने पाश्चात्यों में भी 'पूर्व' के प्रति सम्मान पैदा किया था। आज हम धर्म की बात कितनी भी करें पर धर्म के मूल तत्त्वों को जानते भी नहीं ऐसा लगता है। अन्य ऐसे कई देश जो शायद उतना पूजा-पाठ न करते हों राष्ट्र का निर्माण करने वाले इन सद्गुणों को अपना आभूषण बना चुके हैं। भूमिकास्वरूप इतना लिखने के पश्चात् हम दो देशों की चर्चा करना चाहेंगे। 'राष्ट्र जाए भाड़ में, हमें सत्ता मिल जाय' इस मनःस्थिति तथा व्याकुलता के कारण कांगेस पार्टी ने 'सुनिश्चित न्यूनतम आय' योजना का वादा किया है जिसके अंतर्गत सबसे गरीब ५ करोड़ व्यक्तियों को ६००० रुपये मासिक अर्थात् ७२००० रुपये सालाना की आय का वादा किया है जो सीधे लाभार्थियों के खातों में प्रति माह जमा हो जायेगी। जनता तक वाकई यह रकम पहुंचेगी इसके विस्तार में जायं तो काफी झोल हैं जिसके अर्थशास्त्र की ओर जाना इस आलेख में सम्मिलित नहीं किया है। इसके अतिरिक्त क्या कांगेस सत्ता में आ पायेगी? जो अन्य सहयोगी पार्टियां हैं वह इस घोषणा से सहमत हैं या नहीं , अगर नहीं तो गठबंधन की सरकार इसे लागू क्यों करेगी? और यदि गठबंधन की सरकार बन भी जाती है तो श्री राहुल गांधी उसके मुखिया बनेंगे इस बात की क्या गारंटी है? गरीबों का आंकलन कैसे होगा क्योंकि अच्छी खासी आय वाले लोगों को हमने बी.पी.एल.कार्ड धारक देखा है। अनेक बार गरीबों की योजना का लाभ इन गरीबों के स्थान पर अमीरों को ही लेते देखा है। पायलट प्रोजेक्ट तक की सुनिश्चित अवधि के पश्चात् मुख्य योजना कब लागू होगी अथवा पायलट के असफल हो जाने के बाद त्याग तो नहीं दी जायेगी जैसे अनेक प्रश्न विचारणीय हैं। उन प्रश्नों को न उठाते हुए इस तरह की 'भिक्षा प्रवृत्ति' का आदी २० प्रतिशत लोगों को बना देना क्या राष्ट्र हित में है और भारत के लोगों का इस ओर क्या रवैया होना चाहिए हम केवल इस पर विचार करते हुए ऐसे सन्दर्भों में दो अन्य राष्ट्रों के नागरिकों की प्रतिक्रया पर विचार करेंगे।

श्री राहुल गांधी का 'न्यूनतम सुनिश्चित आय' का विचार कोई नया नहीं है। हालेंड तथा फिनलेंड में इस पर विचार हुआ है। हाँ भारत में इसका और इस प्रवृति का स्वीकरण भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा के विपरीत था, अब इसका विस्तार सभी राजनीतिक दलों द्वारा कमोवेश किया जा रहा है,और उक्त योजना द्वारा तो इसे एक ऐसा अभूतपूर्व आयाम दे दिया है जो घोर चिंता का विषय है।

स्विटजरलैंड में जनमत संग्रह का एक नियम है। यदि कोई प्रस्ताव सरकार के समक्ष ऐसा आये जिस पर १८ महीनों के अन्दर

एक लाख हस्ताक्षर करा लिए गए हों तो देश के अन्दर उस प्रस्ताव पर जनमत संग्रह कराया जाता है। क्योंकि स्विटजरलेंड में आटोमेशन की वृद्धि के कारण बेरोजगारी बढ़ गयी है इसलिए २०१६ में एक प्रस्ताव जिसके अंतर्गत प्रस्तावित था कि सभी बालिग व्यक्तियों को २५०० स्विस फ्रेंक जो लगभग एक लाख छासठ हजार रुपये होते हैं तथा प्रत्येक बच्चे को ६२५ स्विस फ्रेंक जो लगभग ४०००० रुपये होते हैं, दिए जायं। जून २०१६ में इसपर जनमत संग्रह हुआ। मूल प्रस्ताव एक केफे के मालिक डेनियल हैनी का था। आप दिल पर हाथ रखकर सोचिये कि यदि यह प्रस्ताव वर्तमान के भारत में होता तो क्या प्रतिक्रिया होती। 'कुछ भी मुफ्त मिल रहा हो तो टूट पड़ो' के दृश्य वाले भारत के सन्दर्भ में शायद मुझे उत्तर लिखने की आवश्यकता नहीं है। पर स्विटजरलेंड में क्या हुआ ? प्रायः राजनीतिक पार्टियां इसके पक्ष में नही थीं। बलपूर्वक कहा गया कि 'Work done और money earned' के बीच यदि लिंक समाप्त कर दिया जाएगा तो यह समाज के लिए घातक होगा। जनमत संग्रह में इस प्रस्ताव के विरोध में ७७ प्रतिशत मत पड़े जबकि पक्ष में २३ प्रतिशत। स्मरण रहे यह आय-प्रस्ताव सभी के लिए था। CNBC ने इसे 'money for nothing' का नाम दिया है। वहां के नागरिक तथा राजनेता ऐसी खैराती योजनाओं के दुष्परिणाम जानने और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को प्राथमिकता देने के कारण लालच में नहीं फसना चाहते थे। अब यही 'money for nothing' भारत में लाया गया है। क्या यह उदाहरण अपने को विश्वगुरु कहने वालों को कुछ कह रहा है?

यहाँ दूसरा उदाहरण मैं जापान का देना चाहूँगा। यह सन्दर्भ न्यूनतम आय योजना का तो नहीं है पर कर्तव्यनिष्ठ नागरिक, बमों से पूर्णतः विनष्ट राष्ट्र को किस प्रकार ३-४ दशक में ही विकसित राष्ट्र की श्रेणी में ला खडा करते हैं उसका उदाहरण है, जिसे यहाँ देना समीचीन ही होगा। स्थानीय दैनिक भास्कर में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार जापान सरकार ने एक मई को जापान के नए राजा नारुहितो की ताजपोशी के अवसर पर अपने कर्मचारियों को १० दिन की छुट्टी प्रदान की है जिसमें सभी सरकारी और गैर सरकारी आफिस बंद रहेंगे। जापान के लोग लगातार और ज्यादा काम करने के लिए विश्वभर में जाने जाते हैं। अतः एक अखबार द्वारा किये सर्वे के अनुसार ४५ प्रतिशत लोग नाराज हैं। भारत में छुट्टियों का केलेंडर किससे छिपा है? यहाँ किसी राष्ट्रीय व्यक्तित्व के दिवंगत होने के पश्चात् सबसे पहिले यह जानने का प्रयास किया जाता है कि यह केवल राष्ट्रीय शोक मात्र है अथवा छुट्टी भी हो रही है। हमारी ऐसी मानसिकता को केवल इसलिए उद्धृत किया है कि हमारी आरामतलबी की आदत ऐसी मुफ्त की कमाई (कमाई नहीं कहना चाहिए क्योंकि जो काम किये बिना प्राप्त हो,वह कमाई कैसी?) का किस प्रकार बाँह फैलाए स्वागत किया जाएगा। हम स्वयं व्यक्तिगत रूप से एकाधिक अवसरों पर यह देख चुके हैं कि मजदूर का काम करने वाले एक घंटे का काम कर २०० रुपये कमाने के बजाय बिना काम घर लौट जाना ज्यादा पसंद करता है। ऐसी मानसिकता के चलते घर बैठे जब प्रतिदिन जेब में २०० रुपये आ जायेंगे तो वे क्या करेंगे यह विचारणीय है। हमारे राजनेताओं को यह पता है अतः वे पोपूलिस्ट राजनीति को लागू कर येन-केन प्रकारेण सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं।

सोशल मीडिया पर एक सतर्क टिप्पणी पढ़ने में आयी, उसका हिन्दी अनुवाद हम यहाँ दे रहे हैं।

एक राष्ट्र किस प्रकार जानबूझकर और साशय अपने देश के नैतिक ताने-बाने को नष्ट कर सकता है। सरकार व दलों द्वारा कल्याणकारी कार्यक्रमों के नाम के अन्तर्गत मुफ्त की बन्दरबाट केवल जनमत को खरीदना मात्र है। जापान की बात करें तो वहां इस प्रकार की कोई कल्याण कार्यक्रमों की योजना नहीं है जैसे कि मुफ्त गैस इत्यादि। उनका ध्येय वाक्य है कि 'इसके लिए काम करो या इसके बिना करो।' भारत में जो प्रयोग किए जा रहे हैं, उनके बारे में निम्न पांच बिन्दु में कहा जा सकता है जिस पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है।

१. अमीरों को उनकी अमीरी से जुदा करके आप गरीबों को अमीर नहीं बना सकते।

२. जब बिना काम किए किसी व्यक्ति को कुछ दिया जाता है तो यह भी आवश्यक है कि कोई व्यक्ति उसकी एवज में बिना कुछ लिए काम करे।

३. कोई भी सरकार बिना किसी से कुछ लिए किसी को कुछ दे नहीं सकती। अर्थात् किसी को अगर कुछ मुफ्त में लुटाना है तो वह किसी के हिस्से का, सरकार को छीनना पड़ेगा।
४.आप धन को बांटकर इसमें वृद्धि नहीं कर सकते हैं।
५.जब आधे व्यक्तियों को यह पता होता है कि आपको कोई काम करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अन्य लोग आपकी आय की व्यवस्था करेंगे और उसी समय अन्य आधों को जब यह पता चलता है कि कार्य करने से कोई फायदा नहीं क्योंकि इसके बदले में जो आप कमायेंगे वह उन लोगों को दे दिया जायेगा जो कि कोई काम नहीं करेंगे, तो यह राष्ट्र के अन्त की शुरूआत होती है।

वेनेजुएला का उदाहरण क्या हमारी आंख खोलने के लिए पर्याप्त नहीं। १६६८ में वेनेजुएला में राष्ट्रपति का चुनाव हुआ था और ह्यूगो शावेज प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति बने। २००० के आसपास विश्व बाजार में तेल की कीमतों में इजाफा हो रहा था और वेनेजुएला में तेल के प्रचुर भंडार हैं यह सभी को पता है अतः वेनेजुएला की आय में भारी बढ़ोतरी हुई। १६८० के बाद इतना धन इस देश के पास कभी नहीं हुआ। कुछ सामाजिक कल्याण की भावना से और कुछ राजनीतिक दबदबे को निरन्तरता प्रदान करने के उद्देश्य से शावेज ने नागरिकों के आर्थिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक उन्नयन के लिए 'बोलिवेरियन मिशन' की स्थापना की। इस धन की बांट गरीबों में इस प्रकार की गई कि निश्चित तौर पर २००२ से २००८ के बीच में २० प्रतिशत गरीबी समाप्त हो गई। दूसरी ओर राष्ट्रपति की लोकप्रियता और दबदबा भी बढ़ता गया जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर हुई और इसी कारण से जो गरीब तबका था उसमें राष्ट्रपति की लोकप्रियता बेहिसाब थी। परन्तु इस मुफ्त वितरण का परिणाम यह हुआ कि देश के समक्ष आर्थिक संकट आया और २ जून २०१० को 'इकोनोमिक वार' की घोषणा करनी पड़ी। राष्ट्रपति शावेज तो २०१३ में ऊपर चले गए परन्तु समस्याओं का ऐसा भंडार छोड़कर चले गए जिससे आज तक वेनेजुएला उभर नहीं पाया। एक समृद्ध देश के पतन की पटकथा भी अगर हमें चेतना प्रदान नहीं करती तो यह गंभीर बात होगी।

जब अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार अपने समृद्ध देश की यह हालत कर दी गयी तो फिर बन्दर तो पञ्च बनता ही है। रूस और चीन से अथाह कर्ज लेने के कारण आज अमेरिका, रूस और चीन की कुश्ती का अखाड़ा बेनेजुएला बन गया है। यहाँ अकल्पनीय हालत पैदा हो गए हैं। यहां के करोड़पति दो वक्त रोटी का भी इंतजाम नहीं कर पा रहे हैं। एक किलो सब्जी खरीदने के लिए भी लाखों बोलिवर (लोकल करंसी) चुकाने पड़ रहे हैं। हालात ऐसे हो गए हैं कि बैगभर नोट लेकर भी आप यहां भरपेट पूरे परिवार को खाना नहीं खिला सकते हैं। बेतहाशा महंगाई का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यहां एक किलो आलू की कीमत २० लाख बोलिवर पहुंच गई है, वहीं टमाटर ५० लाख बोलिवर, एक किलो गाजर- ३० लाख बोलिवर, एक किलो चावल- २५ लाख बोलिवर और एक किलो पनीर- ७५ लाख बोलिवर में मिल रहा है, वहीं एक प्लेट नानवेज थाली- १ करोड़ बोलिवर में मिल रही है। इस देश के हालात इतने बिगड़ गए हैं कि लोग वेनेजुएला को छोड़कर पड़ोसी देश कोलंबिया भागने को मजबूर हैं। मुफ्तखोरी और सत्ता के लिए बेशर्म दौड़ ने एक खुशहाल देश को नष्ट कर दिया यह भारतीय जनता को कौन बताएगा?

चुनाव के समय में अगर आप रुपये अथवा शराब आदि अन्य वस्तुएं वितरित करते हैं तो वह रिश्वत की श्रेणी में आकर अपराध बन जाता है अतः राजनीतिक दलों ने घोषणा पत्रों के नाम से लोक लुभावन वायदे कर मतदाता को आकर्षित करने का रास्ता निकाल लिया है। कमोबेश कोई भी राजनीतिक दल इससे अछूता नहीं है। डंके की चोट पर यह अपराध किया जाता है। तीन राज्यों के चुनाव में किसान कर्ज माफी की घोषणा से

तीनों राज्यों में जो विजयश्री मिली उससे कांग्रेस उत्साहित है इसी कारण न्यूनतम सुनिश्चित आय ५ करोड़ परिवारों को देने की घोषणा की गयी है जिसके सहारे वे चुनाव की वैतरणी पार करना चाहते हैं। गत दिनों प्रधानमंत्री मोदी जी ने किसान सम्मान निधि के नाम पर किसानों को ६००० रुपये प्रति वर्ष देना प्रारम्भ किया। मोदी जी ने अपने कार्यकाल के ४ वर्षों में कोई पोपूलिस्ट योजना का सहारा नहीं लिया बल्कि वे चरणबद्ध रूप में सब्सिडी समाप्त करना चाहते हैं, परन्तु चुनावी वर्ष के बजट में उन्हें भी आयकर आदि के सन्दर्भ में पोपूलिस्ट घोषणाएं करनी पडीं। भाजपा का संकल्प पत्र भी आ चुका है। नकद तो नहीं परन्तु किसानों की दुगुनी आय जैसी भारी भरकम योजना तथा ६० वर्ष बाद किसानों व निम्न आयवर्ग वाले व्यापारियों को पेंशन आदि योजनायें हैं जिनकी प्रकृति कांग्रेस के नकद वितरण से भिन्न प्रतीत होती है। पता नहीं क्यों ऐसे नकद वितरण के वादे चुनाव आचार संहिता द्वारा प्रतिबंधित नहीं हैं? मेरी दृष्टि में यह 'सामूहिक रिश्वत' है। देश की आजादी के बाद गरीबी हटाने की बात सभी ने की परन्तु न्याय के प्रकार की योजना non election days में कांगेस ने अपने ६० दशक के कार्यकाल में नहीं की यहाँ तक कि इंदिरा जी जब 'गरीबी हटाओ' के नारे के साथ सत्ता में आयीं तब गरीबी दूर करने हेतु उन्होंने भी यह प्रयोग नहीं किया। स्पष्ट है कि आपके जीतने की संभावना कम हो तो 'मत' को खरीद लो , यह हमारी दृष्टि में ऐसा ही अपराध है।

'हल्द लगे ना फिटकरी हम सत्ता में आ जाय' यह इसका प्रबंध है। वर्तमान में हमारा जो नैतिक स्तर है वहां जनता इसके औचित्य पर ठीक ठीक निर्णय ले सकेगी, इस प्रलोभन से दूर रह सकेगी इसमे संदेह ही है। जिसे प्रत्यक्ष घर बैठे, बिना हाथ-पैर हिलाए ६००० रुपये महीने जेब में आ रहे हों वह इस बात पर क्यों विचार करेगा कि देश हित में कौन सा दल सत्ता में आना चाहिए। उसके लिए तो वही भगवान है जो उसे ६००० घर बैठे दे रहा हो। यहाँ हम कुछ बातें बलपूर्वक कहना चाहेंगे -

१. क्या कर्ज माफ कर देना उचित है? कर्ज किनका माफ हुआ ? जो डिफाल्टर थे। और जिन्होंने चाहे कैसे भी हो अपना पेट काटकर, एक समय भूखा रहकर भी बेंकों का कर्ज चुकाया उनको अपनी ईमानदारी का क्या प्रतिफल मिला? आगे जब भी वे कर्ज लेंगे तो जान-बूझकर नहीं चुकायेंगे। उन्हें पता होगा कि चुकाने की आवश्यकता क्या है, फिर चुनाव आयेंगे सत्ता का भूखा कोई दल फिर कर्जा माफ कर देगा और मैं भी उसी प्रकार लाभ ले पाऊँगा जैसा कि कर्ज न चुकाने वाले मेरे पडौसी डिफाल्टर ने गत चुनावों में उठाया था। क्या यह कदम जानबूझकर डिफाल्टर बनने की प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं देगा?

२. यह पैसा आएगा कहाँ से? आज तक किसी नेता ने चाहे वह करोड़पति हो कभी १०-२० करोड़ देश को दिए हों ऐसा सुना नहीं गया। देश की आय का साधन क्या है। निस्संदेह प्रमुख हिस्सा देश की समर्थ जनता से वसूले गये कर से प्राप्त होता है। Tax देने वाला इस औचित्य के साथ देता है कि देश को प्रगति के रास्ते पर ले जाने के लिए यह आवश्यक है। लोक कल्याणकारी राज्य में गरीबों के उन्नयन के लिए इस राशि का व्यय स्वागत योग्य है। गरीबों के उत्थान, शिक्षा, स्वास्थ्य के लिए, उन तक सड़क, बिजली, घरेलू गैस पहुंचाने की उत्तम योजनायें बनाकर उन्हें लाभान्वित करना सर्वथा उचित है। इस सबमें Tax देने वाले को कोई ऐतराज होगा हमें नहीं लगता। उदाहरण के तौर पर आप अच्छी सड़कें बनाकर टोल के रूप में अतिरिक्त राशि लेते हैं किसी को कोई ऐतराज नहीं होता। आप किसानों की समस्या का निदान स्थायी योजना बनाकर निकालें यह तो उचित है। वस्तुतः किसी भी उपज पर किसान की आयी लागत में उसके सम्मानित निर्वाह की राशि मिलाकर जब तक उसे विक्रय मूल्य नहीं मिलेगा तब तक यह समस्या बनी रहेगी। यह एक अत्यंत सरल बात है। परन्तु ऐसा होने पर महंगायी बढ़ेगी इसकी पूरी-पूरी संभावना है। और महंगायी के मुद्दे पर कितनी सरकारें गयीं हैं यह सभी जानते हैं। सरकार दोनों हाथों में लड्डू रखना चाहती है। किसान भी समृद्ध हो जाय और महंगायी बढ़ने से जनता उद्वेलित न हो इस अत्यंत कठिन राह को साधने की कोशिश सभी सरकारें करती हैं परन्तु यह चमत्कार तो किसी गंभीर सुचिंतित योजना से ही होगा जो किसी भी दल द्वारा अभी तक नहीं हो पाया। परन्तु कर्जमाफी कर अपराध करने की लत लगा देना तो अत्यंत घातक होगा इसमे हमें संदेह नही है। दूसरे taxpayer का पैसा आपके लुटाने के लिए नहीं है। आप सत्ता प्राप्त करने में न्याय जैसी अन्याय से परिपूर्ण

योजना का सहारा लेकर taxpayer के धन से सामूहिक रिश्वत दें यह पूर्ण रूप से अनैतिक है। इस प्रकार की योजनाओं पर प्रतिबन्ध होना चाहिए। यद्यपि सही यह भी नहीं है फिर भी यह रिश्वत देनी है तो पार्टी अपने फंड से करे। आपके दिल में गरीबों के प्रति दया ममता का दरिया बह रहा है तो अपनी जेब जरा ढीली कीजिये, तनिक हम भी तो आपकी उदारता का नजारा देखें।

३. सत्ता प्राप्ति का एक अचूक उपाय राजनीतिक दलों के समझ में आया है वह है अमीरों को गाली दो , उनके देश में किसी योगदान को नकारो क्योंकि उनकी संख्या अत्यंत सीमित है। उनके वोट कितने होंगे - अतः अत्यंत अनैतिक परिपाटी बन गयी है कि जिनके वोट ज्यादा हैं उन्ही के हित की बात करते रहो। हमने इस परम्परा को अनैतिक क्यों कहा? क्योंकि देश के विकास में किसी भी कोण से इन उद्योगपतियों का योगदान अमूल्य है। सारा इन्फ्रास्ट्रक्चर, सारा विकास इनपर अवलंबित है। रोजगार के क्षेत्र में सरकारी नौकरियों के मुकाबले कई गुना योगदान इनका है, यह यथार्थ है। हम यहाँ पूंजीपतियों की शोषण करने वाली प्रवृत्ति का समर्थन कतई नहीं कर रहे , परन्तु देश में उनके योगदान से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। वस्तुतः हमें समझना होगा कि राष्ट्र निर्माण में ब्राह्मण (अध्यापक, वैज्ञानिक आदि ज्ञान का विस्तार व प्रयोग करने वाले) क्षत्रिय (सेना, पुलिस आदि) वैश्य वर्ग (व्यापारी, उद्योगपति, किसान) तथा शूद्र वर्ग (श्रमिक) इन सभी का बराबर योगदान है। किसी को भी कम करके आँका नहीं जा सकता। सभी को सम्मान मिलना चाहिए। जो शासक इस संतुलन को बनाते हुए सभी वर्गों की मूलभूत आवश्यकताओं पर विना अन्य के जायज अधिकार का अतिक्रमण किये, ध्यान दे पाता है वही धन्य है।

यहाँ यह लिख दें समर्थ से छीन कर वंचितों में वितरित करने का उपक्रम तो साम्यवाद व समाजवाद के प्रवर्तक देशों में ही सफल नहीं हो पाया तो ऐसे में सामाजिक विषमताओं को दूर करने के सर्वोत्तम नैसर्गिक उपाय के होते कृत्रिम उपाय का अवलंबन बुद्धिमानी नहीं है।

'त्यागवाद' के आगे सारे 'वाद' विफल हैं। त्याग की प्रवृत्ति का निर्माण समाज की जिम्मेदारी है। वेद का 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' ही एकमात्र उपाय है। आप कहेंगे कि यह केवल आदर्शवाद है प्रायोगिक नहीं तो हम कहेंगे कि भारत का इतिहास उठाकर देखलो 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' से भरा पडा है। और अब भी बिल गेट्स, वारेन बफे आदि अरबपतियों का pledge of giving क्या 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' का अनुपम उदाहरण नहीं है। भारत में भी हाल में अजीम प्रेम जी ने उदाहरण प्रस्तुत किया है। भारत में आर्यनेता पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी अपनी दानवीरता के लिए प्रख्यात हैं। पूरे विश्व में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं जो स्वेच्छा से charity कर रहे हैं। मोदी सरकार ने एक कानून बनाया है जिसके अनुसार कंपनियों को अपनी शुद्ध आय का २ प्रतिशत Corporate Social Responsibility हेतु देना चाहिए। ऐसे कदम का स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि इसे निर्देश के रूप में रखा गया है। एक बात और है कि भारत में दान का प्रवाह मुख्यतः धार्मिक स्थलों की ओर है। यह विपुल अकल्पनीय धनराशि है जो स्वेच्छा से दान की जा रही है। जिस दिन इसका प्रवाह गरीब के झोंपडे की ओर हो गया तो समस्या ही नहीं रहेगी और तब भारत वही सोने की चिड़िया होगा, विश्वगुरु होगा। इस भावना का निर्माण करना होगा जो असंभव नही है।

अतः सत्ता प्राप्ति की लालसा में 'न्याय' जैसी सामूहिक रिश्वत की योजना अत्यंत अनैतिक है, अन्याय है। फिर भी आप देना चाहते हैं तो अपने पैसे से दें देश के taxpayerds धन से नहीं।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

मूल्यांकन तो मतदाताओं का ही होता है हर बार

लो एक बार फिर चुनाव का मौसम आ गया। फिर विभिन्न पार्टियाँ सब्जबाग दिखलाकर मतदाताओं को मतदान करने पर विवश करेंगी। मतदान, मतगणना, सरकार का गठन वगैरा-वगैरा वही सब कुछ एक बार फिर दोहराया जाएगा। मतदान के बाद मतगणना से पूर्व प्रायः कहा जाता है कि प्रत्याशियों का भविष्य डिब्बों या मशीनों में बन्द हो गया है लेकिन डिब्बों या मशीनों में किसका भविष्य बन्द होता है, प्रत्याशियों का या मतदाताओं का? प्रजातंत्र में मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करके अपने प्रतिनिधि का चुनाव करते हैं और चुने गए प्रतिनिधियों की मुट्ठी में होता है उसे चुनने वाले मतदाताओं और राष्ट्र का भविष्य। इस प्रकार मतदान के बाद मतगणना से पूर्व डिब्बों या मशीनों में बन्द होता है मतदाताओं और राष्ट्र का भविष्य।

हम अपने हर कर्म द्वारा अपने भाग्य का ही निर्माण करते हैं इसलिए नामांकन की प्रक्रिया से लेकर चुनाव परिणाम तक हर जगह हमारा मूल्यांकन ही तो होता है। यह सारा संसार हमारे मनोभावों की चित्रशाला है। सामूहिक समग्र चिन्तन का ही परिणाम है यह दृश्य जगत्। जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित है इससे। भौतिक समृद्धि हो अथवा सामाजिक व्यवस्था सभी कुछ मनुष्य के स्वयं के तथा समाज के सामूहिक विचार एवं कर्म का ही प्रतिफल है। राजनीति भी इससे भिन्न नहीं है। कहा जाता है कि चुनाव के दिन अगर आप वोट नहीं डाल रहे हैं तो आप सो रहे हैं, बिलकुल ठीक बात है, लेकिन यदि आप वोट डाल रहे हैं तो भी क्या गारण्टी है कि आप सो नहीं रहे हैं?

आप यदि वोट नहीं डालते तो भी आपका मूल्यांकन हो रहा है और अगर आप वोट डालते हैं तो इससे भी आपका मूल्यांकन हो रहा है इसमें सन्देह नहीं। अंग्रेजी में कहा जाता है कि 'डोंट जज अदरवाइज यू विल बी जज्ड'। बिल्कुल ठीक कहा गया है। जब भी हम किसी घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं अथवा किसी चीज का चुनाव करते हैं या किसी का मूल्यांकन करते हैं तो इस प्रक्रिया में सबसे पहले हमारा ही मूल्यांकन हो जाता है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चुनाव एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। जब हम अपने जन प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं तो हम प्रत्यक्ष रूप से तो किसी एक उम्मीदवार का चुनाव ही करते हैं लेकिन परोक्ष रूप से हमारा अपना मूल्यांकन ही हो जाता है।

चुनाव में जीत बेशक एक प्रत्याशी की होती है लेकिन मूल्यांकन समग्र रूप से मतदाताओं का ही होता है कि उन्होंने किस को चुना है और किस को नहीं चुना है। हम

प्रायः शिकायत करते हैं कि गलत लोग चुनाव जीतकर आ जाते हैं। इसका सीधा-सा अर्थ है कि गलत लोग चुनाव नहीं जीतते बल्कि गलत लोगों द्वारा उन्हें विजयी बना दिया जाता है और इसके मूल में होते हैं हमारे निहित स्वार्थ। कहीं कोई पार्टी विशेष के नाम पर विजय पा रहा है तो कहीं कोई धर्म, जाति, संप्रदाय अथवा क्षेत्र विशेष के नाम पर जीत हासिल कर रहा है। यहीं हमारा मूल्यांकन हो जाता है।

क्या हमने कभी ऐसे व्यक्ति को वोट दिया है जो हमारी विरोधी पार्टी अथवा अलग विचारधारा का हो लेकिन समग्र रूप से अच्छा हो? हमारी विरोधी पार्टी अथवा अलग विचारधारा का प्रत्याशी चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो लेकिन हम उसे वोट नहीं देते अपितु इसके उलट अपनी विचारधारा के समर्थक या अपनी पसंदीदा पार्टी के निकम्मे उम्मीदवार को ही विजयी बनाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। कहीं पार्टी के नाम पर मोहर लगती है तो कहीं तथाकथित धर्म, जाति, संप्रदाय अथवा क्षेत्र विशेष के नाम पर बटन दबा दिया जाता है। क्या इससे मतदाता का ही मूल्यांकन नहीं हो जाता?

एक पुस्तक, पत्रिका अथवा कलाकृति को ही ले लीजिए। जब भी हम उस पर कोई प्रतिक्रिया देते हैं या उसकी आलोचना-समालोचना करते हैं तो उसमें सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले की योग्यता का ही पता चलता है कि उसे उस विषय या कला का कितना ज्ञान है। उसका दृष्टिकोण सकारात्मक है या नकारात्मक है। वह कृति का मूल्यांकन कर रहा है अथवा अपनी अज्ञानता या अपनी अपेक्षाओं के अभाव का रोना रो रहा है। उसकी दृष्टि व्यक्तिपरक है या समाजपरक है। वह विषय को समझ भी रहा है अथवा धूल में लट्ठ मार रहा है या फिर मात्र औपचारिकतावश कुछ शब्द प्रशंसा के और कुछ सुझाव देकर खानापूर्ति कर रहा है। जो भी हो मूल्यांकन व्यक्ति का हो रहा है कृति का नहीं। गणतंत्र के इस यज्ञ में हम भी कहीं वोट रूपी आहुति देने की मात्र खानापूर्ति तो नहीं कर रहे हैं? यह हमें देखना होगा।

किसी व्यक्ति के घर में किस प्रकार की पुस्तकें अथवा कैसा अन्य साजो-सामान है इसी से उसकी रुचियों और व्यक्तित्व का पता चलता है। महंगे फर्नीचर और अन्य साजो-सामान से पता चलता है कि व्यक्ति आर्थिक रूप से समृद्ध है लेकिन उसकी पुस्तकों, कलाकृतियों और संगीत के संग्रह से उसकी वास्तविक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक अभिरुचि और चयन की योग्यता का पता चलता है। चुनाव भी मतदाता की योग्यता का ही मूल्यांकन है। क्या उसे सचमुच प्रजातांत्रिक मूल्यों की समझ है? क्या वो अपने मताधिकार का प्रयोग करके राष्ट्र को सशक्त बनाने की दिशा में ले जा रहा है अथवा कमजोर करने की दिशा में ले जा रहा है?

हम चाहे जिस व्यक्ति, दल अथवा विचारधारा को वोट दें इससे मूल्यांकन तो हमारे चुनाव का भी होता है। चुनाव से समाज का समग्र मूल्यांकन हो जाता है और समाज के मूल्यांकन से व्यक्ति का मूल्यांकन इसमें सन्देह नहीं। क्या हममें सचमुच सही चुनाव करने की योग्यता का विकास हो चुका है इस पर एक बार फिर से गौर करने की निहायत जरूरत है। दूसरे व्यक्तियों अथवा वस्तुओं का चुनाव या मूल्यांकन करने से पूर्व एक बार स्वयं का मूल्यांकन करने से सम्भव है हममें अपेक्षाकृत सही चुनाव करने की योग्यता उत्पन्न हो जाए। तो क्यों न इस बार अपने मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में हम स्वयं भी सशक्त होकर उभरें?

- सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६-सी, पीतमपुरा
दिल्ली-११००३४, चलभाष- ०९५५५६२२३२३

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मैंने स्वामी दयानंद जी के बारे में जो पढ़ा और सुना था, आज यहाँ आने पर मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उनको प्रत्यक्ष देखा। - लक्ष्मी नारायण

आर्यसमाज की आर्ट गेलेरी को हमने देखा और पाया कि दुनिया में अंधविश्वास अभी भी बहुत ज्यादा है। लोगों को यहाँ पर आना चाहिए ताकि वो अज्ञानता का पर्दा अपने दिमाग से निकाल पायें। - पूरणमल

ऋषि दयानंद जी के बारे में जो जानकारी मिली ऐसी जानकारी कहीं भी नहीं मिली थी -देवराज आर्य, पानीपत

आज यहाँ मैंने सब कुछ देखा। मैं अधूरी बातों का जानकार था। लेकिन मुझे आज पूरी जानकारी मिली। मैं बहुत खुश हुआ। -गुरुदेव आर्य, पानीपत

A gallery which can make any Indian proud. Thanks to Shambhu Lal ji who explained it beautifully- Lets be prould of our culture - Prem Mundra

HAWAN FOR CLEANSING THE ENVIRONMENT

(अग्निहोत्र के महत्व तथा उपयोगिता को व्याख्यायित करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में जो लिखा है वह ध्यातव्य है। 'अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि, जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होना अर्थात् शुद्ध वायु का श्वांस स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि बल, पराक्रम बढ़ के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होना (संभव है)' - सत्यार्थ प्रकाश

The man has not realized the significance of the other living world i.e. the plant kingdom around him that how important it is for his survival. One can live without food for few days and water for some hours but cannot live without AIR i.e. oxygen known as **Pran-vayu**.

The greed and wish to accumulate more and more than our needs has caused a severe damage to the plant kingdom which has now become a threat for human survival so much that it has become an issue of Global concern.

Havan is an ancient ritual which is performed to purify the atmosphere and the environment.

How Havan Purifies The Atmosphere: when the havan is performed the air touches the fire, gets purified and becomes lighter in nature. So this light air goes up and replaces the cold/ the impure air and this process continues (as we studied in geography ; how the lighter air from the plains replace the heavier air from the poles) and the air keep getting purified till the ritual is being performed.

(वस्तुतः दो समय अग्निहोत्र करना पर्याप्त है क्योंकि महर्षि मनु तथा महर्षि दयानन्द के अनुसार- 'जो संध्या संध्याकाल में होम होता है,वह हुतद्रव्य प्रातःकाल तक वायुशुद्धि द्वारा सुखकारी होता है। जो अग्नि में प्रातः प्रातःकाल में होम किया जाता है, वह-वह हुतद्रव्य सायंकाल पर्यन्त वायु के शुद्धि द्वारा बल, बुद्धि और आरोग्यकारक होता है।')

The main ingredient in havan is mango wood which when burnt releases FORMIC ALDEHYDE a gas which kills harmful bacterias thus purifies the atmosphere as per the research of scientist **Trello** from **France**. It then made **Formalin** from formic aldehyde gas which is used to preserve the fruits, vegetables and species in the medical laboratories.

The jaggery burnt in the havan also releases the formic aldehyde gas. **A scientist Tautlik found that if we stay in a place where havan is being performed for ½ an hour the germs of typhoid fever are killed.**

The cow's ghee the very important

ingredient of haven has been referred as an antidote to the poison in VEDAS. Its fragrance purifies the physical atmosphere. Ghee when burnt in fire goes up in the atmosphere and the fat particles get laden on the dust particles in the atmosphere (somewhat similar to the stickiness on the objects in the kitchen) and comes back to the earth in form of rain thus nourishes the vegetation on the mother earth. **Dr. Shirowic, a RUSSIAN SCIENTIST says that if cow's ghee is put in fire, its smoke will lessen the effect of radiation in the atmosphere to a great extent.**

Sweets like honey and gur (jaggery), nutrition like ghee and dry fruits, aromatic herbs like ela, dalchini, Lavang rose petals, antibiotic herbs like guggal and gyal, and matter like ghee and samigri when burnt cause rain and purify the atmosphere. {SAMVEDA MANTRA 534} Havan ritual is like giving back to the atmosphere what we have taken from the atmosphere. The aromatic herbs when burnt remove the foul odor in the atmosphere by their fragrance.

As per the research conducted by Dr. Kundan lal M.D. (allopathic medicine) found that no bacteria was killed when 1 k.g. of mango wood was burnt in a closed room but when the same was burnt with havan samigri the bacterial count was reduced by 94% (chander shekhar nautiyal, head of the division studying plant- microbe interaction) The air sample even after 24 hrs. showed that bacteria count was lower by 96%. So havan is helpful to prevent air born infections like T.B. and other viral infections.

Prof. Tilward says that fumes of havan kills the bacteria of T.B., Measeles, Cow pox, Small pox.

As it is said that basis of food is EARTH and basis of earth is WATER and basis of water is AIR and if air is pure; everything would be pure. Even the ash from the havan seems to be having cleansing effect that is why it is a ritual to immerse the havan ashes in the water. EAST EUROPIAN countries use ash as soil treatment which has shown positive results.

Formaldehyde is sprayed to disinfect walls and ceilings and is also used to preserve the fruits as formic acid which is produced by burning mango wood and jaggery (gur).

Havan has been found an effective method to reduce the FUNGAL load in small office or room. As per the experiments conducted the havan fire smoke has the potency to kill fungi like Aspergillus, Penicillium, Curvuleria and cladosporium etc. (Earth environmental science) in June 2007 in Acrobiolagia A Journal published in NETHERLAND.

The oxidation of hydrocarbons (in ghee and oils found in dry fruits) produce formic acid and acetic acid (vinegar) used to preserve food material.

Since, the formaldehyde is effective only in the presence of water that is why there is a ritual of sprinkling the water around the HAVAN–KUND and in the air. The water is also available in form of water vapours found in the atmosphere.

Heal the atmosphere with havan and the healed atmosphere will heal you says Dr.madukar giakwaad.

DR. Hafkin says that inhaling the fumes of havan from distance induces secretions from certain glands related to wind pipe that fills our mind and heart with relaxation.

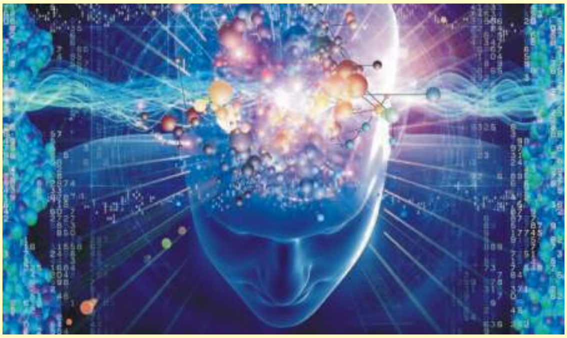

The use of carbon dioxide as CEREBRAL STIMULANT suffering from lack of ventilation (mouth to mouth breathing technique) is a common practice in medical world. Similarly carbon dioxide produced in HAVAN is at a very slow pace and then this smoke is rich with the AROMA of all the material burnt in it acts as stimulant to the BRAIN and the same carbon dioxide is used by the plants also. This was published as YAJNA'S SCIENTIFIC INTERPRETATION (an article published in the proceedings of ashawmedha yajna held in Montreal CANADA 26-28 July 1996).

While performing the ritual of HAVAN it has to be kept in mind that there should absolute combustion of the material in the havan samigri to tap the maximum benefit of the havan.I remember the fact as a child when we used to attend the havan ceremony in ARYASMAJ that the seniors always laid stress on how to arrange the SAMIDHAS (the wood used in havan) in the havan kund. They ensured it that enough space is left for the proper circulation of the air, and moment there was smoke; seniors used to say loudly "ghee dalo aur Agni prajawalit karo" means that pour enough ghee so that it catches fire as ghee is known to help in the process of combustion.

Other than purifying the atmosphere Havan has the capacity to influence the local rains. Since, the havan is performed while chanting the HOLY MANTRAS; so the havan ritual charges the ATMOSPHERE with positive energy also.

Havan smoke is like inhalation therapy derived from AYURVEDA and as described above it relaxes the mind and heals the body and has positive effects spiritually too because of the holy verses (mantras) chanted during the havan.

- Sunita Gupta

महाशय जी का पद्मोत्सव
धूमधाम से मनाया गया

आर्य जगत् के गौरव महाशय धर्मपाल जी को भारत सरकार ने वर्ष २०१६ के पद्मभूषण पुरस्कार से अलंकृत किया। आर्यजनों की प्रसन्नता को अभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु दिनांक २६ मार्च २०१६ को दिल्ली के तालकटोरा स्टेण्डियम में भारी जनसमूह की उपस्थिति इस आह्लादकारी क्षण को मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ के द्वारा हुआ। इसके पश्चात् श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में मुख्य कार्यक्रम सभागार में हुआ। इस अवसर पर भारी संख्या में आर्य जगत् के शीर्षस्थ संन्यासी महानुभाव, आर्ष कन्या गुरुकुलों की आचार्यागण एवं समस्त भारत से पधारे आर्य समाज के प्रदेशस्तरीय पदाधिकारी, आर्य विद्यालयों के विद्यार्थी एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने उपस्थित हो समारोह को चार चाँद लगाये। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी, प्रणवानन्द जी, स्वामी देवव्रत जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी सदानन्दजी, स्वामी ऋतस्पति जी, आचार्य विजयपाल जी आदि संन्यासियों का सम्मान किया गया एवं गुरुकुल की सभी आचार्यागण जिन्होंने अपने क्षेत्र में आर्ष शिक्षा के प्रसार हेतु सर्वस्व समर्पित किया हुआ है, उन्हें अलंकृत किया गया।

आज ९६ वर्ष पूर्ण करने के बाद भी महाशय जी का जीवन यज्ञ योग एवं धर्म की त्रिवेणी का संगम है। मानवता से उनका प्यार सभी सीमाओं से परे है। आप उनकी आंखों में प्रत्येक जन के प्रति स्नेह का भाव स्पष्ट देख सकते हैं। परोपकार के कार्यों के लिए उनकी ऊर्जा असीम है। वे इस युग के महानायक हैं। उनका जीवन प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। हम न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से, प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि पूज्य महाशय जी को १०० वर्ष से भी अधिक की निरामय आयु प्रदान करें ताकि उनकी सेवाओं एवं प्रेरणा से समाज लाभान्वित होता रहे।

- अशोक आर्य

माँ–बाप का दिल ना दुःखा

इस दुनिया में हमारे में से कोई भी माता, पिता तथा परमात्मा की मर्जी के बिना नहीं आया। विवाह के बाद पति पत्नी औलाद की कामना करने लगते हैं। बहुत बार मन्नत, मुरादें, व्रत, उपवास, दान पुण्य करते हैं। बहुत देर हो जाए तो डाक्टरों से अपनी जांच-पड़ताल कराते हैं। कुछ मामलों में तो सन्तान सुख प्राप्त ही नहीं होता। कुछ मामलों में केवल लड़की ही होती है और मां बाप बेटे के सुख को तरसते रहते हैं। उनका मानना है कि बेटा ही खानदान का वारिस होता है तथा खानदान को आगे बढ़ाता है। लेकिन मां बाप को हर बार वैसा सुख पुत्र से नहीं प्राप्त होता जिसकी कि वे कामना करते हैं। बहुत बार लाड प्यार से लड़का बिगड़ जाता है, गलत आदतों का शिकार हो जाता है, पढ़ाई लिखाई नहीं करता, चोरी, चकारी, झूठ, लड़ाई, झगड़ा, बलात्कार, राहजनी उसे अपराध जगत् का सदस्य बना देते हैं। आजकल अधिकांश युवा अहंकारी, जिद्दी, कामचोर, लापरवाह, कृतघ्न, मां बाप की सेवा ना करने वाले, हर बात में जल्दी करने वाले, मां बाप का अपमान, अवज्ञा, तिरस्कार करने वाले, उनका कहना ना मानने वाले होते हैं। बेचारे मां बाप बेटों की इस किस्म की बदतमीजियां यह सोचकर सहन करते रहते हैं कि जब इस पर कबीलदारी का बोझ पड़ेगा, सब ठीक हो जायेगा। लेकिन बहुत सारे मामलों में देखा गया है कि विवाह के बाद भी बेटा सुधरने के बदले में बिगड़ना शुरु कर देता है। बेटा और बहू मिलकर मां बाप को बहुत सताते हैं, उन्हें पेटभर खाना नहीं देते, बीमार होने पर इलाज नहीं कराते,किसी से बात नहीं करने देते, घर के मामलों में उनकी कोई सलाह नहीं लेते, बच्चों को उनके साथ खेलने या बातचीत नहीं करने देते। बेचारे मां बाप अपने ही घर में परदेशी बन जाते हैं। कुछ बेटे अपनी विवाहित बहनों को घर में नहीं आने देते। मां बाप की धन सम्पत्ति पर कब्जा कर लेते हैं। मां बाप का जीवन नर्क बन जाता है। वे हर पल परमात्मा से मौत की भीख मांगते हैं। पर क्या मांगने से मौत मिल जाती है ? बेटे और बहुएं मां बाप को सताते हैं, बात बात में उन्हें ताने मारते हैं, उन्हें मरने या फिर घर से निकल जाने की धमकियां देते हैं। बहुत बार घर से निकाल देते हैं या फिर वृद्धाश्रम में दाखिल करा देते हैं और फिर कभी भी उनकी सुध नहीं लेने जाते। सचमुच बुढ़ापा एक श्राप है। जब आदमी जवान होता है वो अपने बच्चों को सुख सुविधाएं जुटाने में कोई कसर नहीं छोड़ता, उन्हें चलना, फिरना, बोलना अपने पैरों पर खड़े होना सिखाता है। मां खुद गीले में सोती है और बेटे को सूखे में सुलाती है, खुद भूखी सोती है, लेकिन बच्चों को पेटभर खाना खिलाती है। घर देर से आने पर उसकी बेसब्री से चिन्ता करते हुए इंतजार करती है, उसे दूल्हा बनाने के लिए सपने सजाती है। और बाप बेचारा उसके लिए कौन कौन से खिलौने नहीं लाता है, उसके हित के लिए तरह तरह के पापड़ बेलता है, लोगों के पास जाकर तरह तरह की खुशामदें करता है। लेकिन बेटा बड़ा होकर सब कुछ भूल जाता है। मां बाप का लाड प्यार, त्याग, कुर्बानी, परिश्रम, समर्पित भावना सब कुछ भुला देता है। अपने बच्चों के लिए बेटे जो त्याग, परिश्रम करते हैं,उससे कहीं ज्यादा मां बाप ने उनके लिए किया था। लेकिन बेटे सब कुछ भूल जाते हैं। मां बाप ने बेटों की उंगली पकड़कर उन्हें चलना सिखाया, बेटे मां-बाप को बेसहारा कर अलग घर गृहस्थी बसा लेते हैं। कई विदेश में बस जाते हैं। अधिकांश जोरू के गुलाम बनकर मां बाप पर

(पौत्री को यही बताया गया कि दादी बाहर रिश्तेदार के यहां गई है। परन्तु एक दिन विद्यालय के कार्यक्रम के अन्तर्गत वह लड़की जब विद्यालय की अन्य छात्राओं के साथ एक वृद्धाश्रम की विजिट पर गई तो वहां अपनी दादी को देखकर हतप्रभ रह गई। दादी-पोती एक दूसरे के गले मिलकर रोने लगी। -सम्पादक)

जुल्म करते हैं। पता नहीं बेटे बड़े होकर मां बाप के प्यार, त्याग, मेहरबानियों को भूलकर क्यों लापरवाह और क्रूर बन जाते हैं। वे जानते नहीं कि मां बाप के आसुंओं और आहों में आंधी, तूफान और भूचाल छुपे होते हैं। बेटे अपने मां बाप की धन, सम्पत्ति और उनका रसूख तो लेना चाहते हैं लेकिन उनकी देनदारियां, संस्कार शिक्षा, जिम्मेवारी तथा नसीहत नहीं लेना चाहते। बेटे शायद जानते नहीं कि उनकी औलाद सब कुछ देख रही है, जब वे बूढ़े हो जायेंगे तो उनकी औलाद उनके साथ और भी बुरा व्यवहार करेगी। तब वे चीखेंगे, चिल्लायेंगे, रोयेंगे, कोई उनकी बात सुनने वाला नहीं, हमदर्दी दिखाने वाला नहीं होगा। लोग तीर्थों पर जाते हैं, उपवास करते हैं। जगराते कराते हैं, दान पुण्य करते हैं, भगवान को खुश करने के तरीके अपनाते हैं। इन सबका कोई फायदा नहीं अगर हमारे माता पिता उनके प्यार, बातचीत, मान-सम्मान, देखभाल के लिए तड़प रहे हों। क्या आज के जमाने में कोई पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करते हुए १४ साल वनवास जाने को तैयार होगा? मां-बाप तथा बुजुर्ग बड़ के पेड़ की तरह होते हैं। उनकी औलाद उनकी छत्रछाया में पलती तथा बड़ी होती है। मां बाप बच्चों के लिए अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं। कहते हैं कि जब अकबर छोटा लड़का था, वह बीमार पड़ गया। उसके वालिद हूमायूं ने परमात्मा से प्रार्थना की कि हे खुदा मेरे बच्चे को ठीक कर दे, बेशक मेरी जान ले ले, कहते हैं कि हूमायूं की प्रार्थना स्वीकार हुई। अकबर ठीक हो गया, लेकिन हूमायूं मर गया। यह है मां बाप का त्याग। सुबह सवेरे मां बाप के पाव छूने चाहिए रात को पांव दबाने चाहिए जिसने मां बाप को मना लिया समझो रब को पा लिया। आपको एक पुरानी फिल्म का गाना तो याद होगा 'ले लो, ले लो दुआएं मां बाप की सिर से उतरेगी गठड़ी पाप की।' तभी तो मेरा आज के युवाओं से कहना है कि अपने मां बाप का दिल ना दुःखा, उन्हें ना सता, मां बाप की सेवा जन्नत का दरवाजा है।

– शामलाल कौशल

व्यथा – कथा

दुराचार उपदेश बने,
व्यभिचार मुक्ति का द्वार हुआ।
कविता बनी चरित्र हीनता,
योगी सब संसार हुआ।
जीव अधिकतर ब्रह्म हुए,
कामी कुत्ते भगवान बने।
अश्लीलता संस्कृति बन गई,
और धूर्त विद्वान् बने।
घोर अविद्या के पुतले,
शंकराचार्य कहलाते हैं।
राग- द्वेष से पूर्ण,
स्वयं को वीतराग बतलाते हैं।
यम और नियम उदास खड़े हैं,
योगासन अब खेल हो गए।
महर्षियों की नई शोध में,
आज पतंजलि फेल हो गए।

स्वास्थ्य शिथिल है संयम जी का,
वेद शास्त्र सब रोते हैं।
स्वयं पुण्य जी पाप कुण्ड में,
पड़े खा रहे गोते हैं।
बाजीगर सद्गुरु कहलाते,
बगुले बन गए ब्रह्मज्ञानी।
पाखण्डी पण्डित बन बैठे,
धर्म बन गई मनमानी।
श्वानवृत्ति ही राजनीति है,
और भेड़िए नेता हैं।
बन्दर वितरक बन बैठे हैं,
तस्कर धर्म प्रणेता हैं।
प्रगतिशीलता यहाँ उड़ाती,
पुरखों की खिल्ली देखो।
अरे दूध की रखवाली में,
बैठी है बिल्ली देखो।
आज विश्व का गुरु यह भारत,
दीन-हीन हो रोता है।

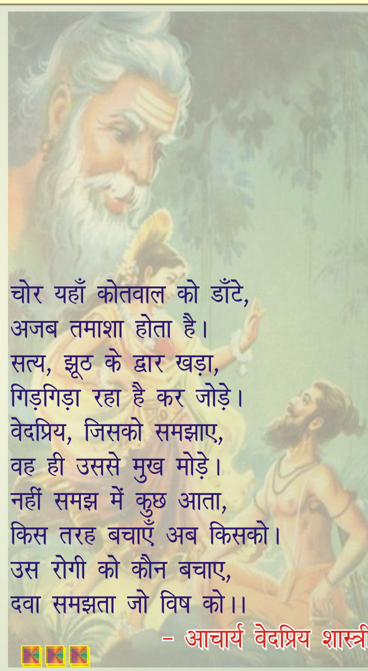

चोर यहाँ कोतवाल को डाँटे,
अजब तमाशा होता है।
सत्य, झूठ के द्वार खड़ा,
गिड़गिड़ा रहा है कर जोड़े।
वेदप्रिय, जिसको समझाए,
वह ही उससे मुख मोड़े।
नहीं समझ में कुछ आता,
किस तरह बचाएँ अब किसको।
उस रोगी को कौन बचाए,
दवा समझता जो विष को।।

– आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

Stephen Hakwing, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'The Grand Design' में ईश्वर की सत्ता को अपने अवैज्ञानिक कुतर्कों के द्वारा नकारने का असफल प्रयास किया है, वहीं शरीर में जीवात्मा की सत्ता को भी अस्वीकार करने का असफल प्रयत्न किया है। वे उसमें रोबोट एवं परग्रही जीव में भेद भी करते हैं, पुनरपि परग्रही जीव में स्वतन्त्र इच्छा व बुद्धियुक्त आत्मा को नहीं मानते। यही हठ वर्तमान विज्ञान को विनाशकारी भोगवादी मार्ग पर ले जा रही है। वे लिखते हैं-

How can one tell if a being has free will? If One encounters an alien, how can one tell if it is just a robot or it has a Mind of its own? The behavior of a robot would be completely determined, unlike that of a being with free will. Thus one could in principle detect a robot as a being whose actions can be predicted. As we said in Chapter 2, this may be impossibly difficult if the beings large and complex. We can not even solve exactly the equations for three or more particles interacting with each other. Since an alien the size of a human would contain about a thousand trillion trillion particles even if the alien were a robot, it would be impossible to sole the equations and predict what it would do. We would therefore have to say that any complex being has free will-not as a fundamental feature. but as an effective theory, admission of our inability to do the calculations that would enable us to predict its actions" **(The Grand Design- P. 178)**

यहाँ पाठक विचारें कि यदि Thousand trillion trillion particles ही बुद्धि, इच्छा की उत्पत्ति का कारण हो सकते हैं, तब क्या रोबोट में इतने कण नहीं होते? वह भी उन्हीं मूलकणों से बना है, जिनसे हमारा शरीर बना है। अणुओं के स्तर पर ही भेद है, अन्यथा लगभग परमाणुओं के स्तर पर कोई भेद नहीं है, मूलकण स्तर पर तो नितान्त समानता है। तब कैसे कणों की संख्या मात्र के कारण भेद को मान लेते हैं और जीव के व्यवहार को केवल इसी आधार पर अज्ञेय बता देते हैं। आज एक मनुष्य अनेकों स्वचालित रोबोट्स का निर्माण कर सकता है परन्तु क्या अनेकों रोबोट्स मिलकर भी बिना मनुष्य की प्रेरणा व नियन्त्रण के एक मनुष्य तो क्या, स्वयं एक रोबोट का निर्माण भी कर सकते हैं? इस अवैज्ञानिकता व दम्भपूर्ण पुस्तक में जन्म, मरण, इच्छा आदि को जिस प्रकार समझाया है, वह वास्तव में हॉकिंग साहब को वैज्ञानिक के स्थान पर मात्र एक प्रतिक्रियावादी दुराग्रही नास्तिक दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत करता है। इसे पढ़कर मेरे मन में इनके प्रति जो सम्मान था, वह लगभग समाप्त हो गया है। उनके प्रत्येक तर्क का उत्तर सरलता से दिया जा सकता है परन्तु इस ग्रन्थ में जीव की सत्ता की सिद्धि आवश्यक नहीं है, पुनरपि यहाँ हम संक्षेप में कुछ विचार कर रहे हैं।

रोबोट में इच्छा, ज्ञान, प्रयत्न, द्वेष, सुख व दुःख ये कोई गुण नहीं होते। वह किसी मनुष्य द्वारा निर्मित व संचालित होता है। उधर कोई भी जीवित प्राणी किसी अन्य द्वारा संचालित नहीं होता है, बल्कि प्रत्येक कर्म को करने में स्वतन्त्र होता है। आज हॉकिंग साहब जैसे जो कोई वैज्ञानिक इच्छा, ज्ञान आदि गुणों से युक्त व्यवहार की कथित व्याख्या करके जीवत्मा की सत्ता को नकारने का प्रयास करते हैं, वह वस्तुतः इस प्रकार ही है, जैसे कोई व्यक्ति किसी हलवाई द्वारा बनाये जा रहे व्यजनों की व्याख्या में आग, पानी, आटा, शक्कर, दूध, घी, कड़ाही, चम्मच आदि सबके कार्यों को बता रहा हो ,इन खाद्य पदार्थों में नाना परिवर्तनों की रासायनिक प्रक्रिया बता रहा हो परन्तु हलवाई की चर्चा ही न कर रहा हो, बल्कि

उसके अस्तित्व को ही नकार रहा हो। ऐसी कथित वैज्ञानिक व्याख्याएँ वास्तव में अवैज्ञानिक व दुराग्रहपूर्ण ही होती हैं। ये वैज्ञानिक इसी प्रकार इस सृष्टि की वैज्ञानिक व्याख्या करते समय उसके निर्माता, नियन्त्रक वा संचालक असीम बुद्धि व बल से सम्पन्न चेतन परमात्मतत्व की उपेक्षा ही नहीं करते, बल्कि उसके अस्तित्व को ही नकारने में एड़ी से चोटी तक का जोर लगाते हैं। हम निःसन्देह वैज्ञानिकों की इस वैज्ञानिक व्याख्याओं की सराहना करते हैं। निश्चित ही वे मूल भौतिकी के क्षेत्र में सतत् गम्भीर अनुसन्धान कर रहे हैं और करना भी चाहिये परन्तु इस सम्पूर्ण उपक्रम में चेतन नियन्त्रक, नियामक तत्व को सर्वथा उपेक्षित कर देते हैं। यही कारण है कि विज्ञान वर्तमान मूल भौतिकी की अनेक समस्याओं को आज तक सुलझा नहीं पाया है। इसी कारण विज्ञान की History of the time में भारी त्रुटियाँ हैं, ऊर्जा- द्रव्य संरक्षण के भंग होने की समस्या है, 'क्यों' व 'क्या' जैसे प्रश्नों का उत्तर न मिल पाना समस्या है, वस्तुतः सर्वत्र समस्याएँ ही समस्याएँ हैं।

इस सबके लिखने का अभिप्राय यही है कि सम्पूर्ण जड़ जगत्

में जो भी बल व गति विद्यमान है, उस सबके पीछे चेतन ईश्वर तत्व की ही मूल भूमिका है, उधर प्राणियों के शरीर में आत्मा की भूमिका रहती है। प्रत्येक गति के पीछे किसी न किसी बल की भूमिका होती है। केवल बल की भूमिका से गति यदृच्छया, निष्प्रयोजन एवं अव्यवस्थित होगी परन्तु सृष्टि एक व्यवस्थित, बुद्धिगम्य व सप्रयोजन रचना है, इस कारण इसमें बल के साथ महती प्रज्ञा की भी भूमिका अवश्य है। बल व बुद्धि किंवा इच्छा, ज्ञान आदि का होना केवल चेतन में ही सम्भव है। यही चेतन तत्व ईश्वर कहलाता है। इस तत्व पर विचार करना वर्तमान विज्ञान के सामर्थ्य की बात नहीं है, इस कारण वर्तमान वैज्ञानिकों को भौतिक विज्ञान के साथ-साथ दर्शन शास्त्र, जहाँ ईश्वर, जीव रूपी सूक्ष्मतम चेतन एवं प्रकृति, मन, प्राण आदि सूक्ष्मतर जड़ पदार्थों का विचार किया जाता है, पर भी गम्भीर चिन्तन करना चाहिए, इससे वर्तमान भौतिक विज्ञान की अनेक समस्याओं का समाधान करने में सहयोग मिलेगा ।

क्रमशः......

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

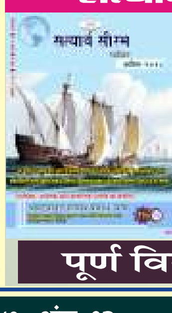

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ताकि पछताना न पड़े

Design Own Life

हम सब इस सार्वभौम सत्य (Universal truth) को जानते हैं कि मरता हुआ व्यक्ति हमेशा सत्य बोलता है। उसकी कही एक-एक बात देववाणी (Epiphany) के तुल्य होती है। आस्ट्रेलिया की ब्रोनी वेयर (Bronnie Ware) ने ऐसे ही मृत्यु से जूझ रहे लाईलाज बीमारियों व असहनीय दर्द से पीड़ित लोगों (Patients) की सेवा (Palliative care) में कई वर्ष एक उपशामक नर्स (Palliative Nurse) की तरह कार्य किया। ब्रोनी वेयर ने इस अवधि में एक बहुत ही सार्थक व रोचक सर्वेक्षण किया। जिसके निष्कर्ष हमारी आँखें खोल देने वाले हैं!

ब्रोनी वेयर ने मौत से जूझ रहे मरीजों की कई वर्षों तक देखभाल की। उसने कई ऐसे मरीजों की सेवा की जिनका जीवन अंतिम १२ सप्ताह में था। ब्रोनी वेयर ने अपने पेशेंट्स से पूछा कि आज आपकी जिन्दगी अन्तिम दिनों में है तो आपको अपने जीवन में सबसे बड़ा पछतावा किस बात का रहेगा? उसने उनके द्वारा बतायी गयी बातों (Epiphanies) को अपने ब्लोग पर रिकार्ड किया। पूरे सर्वे में उसने पांच शीर्ष पछतावों को सूचीबद्ध किया। मरीजों की बातों ने उसका इतना ध्यान आकर्षित किया कि उसने अपने Observations की एक किताब Top five regrets of the dying persons तैयार कर दी। यह पुस्तक विश्व की बेस्ट सेलिंग पुस्तक साबित हुई। अब तक यह पुस्तक २७ भाषाओं में छप चुकी है।

ब्रोनी वेयर द्वारा मृत्यु से जूझ रहे लोगों के रिकार्ड किये गए पछतावों में ज्यादातर आम अफसोस (Common Regrets) थे। ब्रोनी ने Patients के Observations में यह पता लगाया कि सबसे ज्यादा Common Regrets क्या हैं तो उन पछतावों में सबसे ज्यादा Patients ने बताया कि, 'मेरी इच्छानुसार, मैंने उतनी कड़ी मेहनत नहीं की।'

वेयर ने लिखा है कि लोगों का जिन्दगी के अन्तिम पड़ाव में दृष्टिकोण (Vision) अभूतपूर्व रूप से स्पष्ट था, जिससे हम बहुत सीख सकते हैं। जब उनसे प्रश्न किया गया कि 'क्या उन्हें कोई पछतावा है या कुछ अलग कर सकते थे।' सामान्यतः वह बताती हैं कि 'लोगों से बार-बार एक जैसे मुद्दे उभर कर सामने आये।' वेयर ने सबसे बड़े पांच पछतावे नोट किये।

१. अपने लिए भी जिएं - मेरी इच्छानुसार (काश मैं), दूसरों की अपेक्षा के अनुसार जीवन न जीकर मैं स्वयम् के प्रति ईमानदारी से जीवन जीने की हिम्मत जुटा पाता।

यह सबसे ज्यादा आम रिग्रेट था। जब लोग महसूस करते हैं उनका जीवन लगभग समाप्त हो गया है, वे पीछे स्पष्ट देखते हैं कि उनके बहुत सारे सपने अधूरे रह गये। अधिकतर लोगों ने अपने आधे सपनों को भी पूरा नहीं किया था। उनको यह जानते हुए मरना पड़ा कि यह सब उनके ही कारण हुआ। बहुत कम लोगों को एहसास है कि स्वास्थ्य ही आजादी से जीने की राह देता है। और जब तक एहसास होता है, तब तक स्वास्थ्य उनके हाथ से निकल जाता है।

२. स्वयं को भी अपेक्षित समय दें - (काश मैं) मेरी इच्छानुसार, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने साहस जुटा पाता।

ब्रोनी वेयर ने पाया कि बहुत सारे लोगों ने अपनी भावनाओं को इसलिये दबाया कि शांति बनी रहे, परिणामस्वरूप उनको औसत दर्जे का जीवन जीना पड़ा और वे अपनी वास्तविक योग्यता के हकदार नहीं बन सके। इसी बात की कड़वाहट और असंतोष के कारण उनको कई बीमारियां हो गयी थीं।

३. परिवार को भी अपेक्षित समय दें- मेरी इच्छानुसार, मैंने उतनी कड़ी मेहनत नहीं की। ब्रोनी वेयर ने बताया कि, "मैंने जितने भी पुरुषों का उपचार किया प्रत्येक को यह Regret था। उन्होंने अपने युवा बच्चों व जीवन साथी के साहचर्य में हुई चूक को याद किया। औरतों ने भी यह रिग्रेट बताया, परन्तु उन में से अधिकतर पुरानी पीढ़ी की थीं, ज्यादातर महिला Patients के पास जीविकोपार्जन के साधन नहीं थे।

पुरुषों को बहुत ही गहरा पछतावा था कि उन्होंने अपना अधिकतर जीवन अपने कार्य स्थल पर खर्च कर दिया था। उनमें से हरेक ने कहा कि, 'मैं कड़ी मेहनत करके उनके लिये समय निकाल सकता था।'

४. मित्रों की अहमियत को सदैव स्थान दें- (काश) मेरी इच्छानुसार, मैं मेरे मित्रों के साथ संपर्क में रहता।

ब्रोनी ने सर्वेक्षण में बताया कि "अक्सर लोगों को मृत्यु के नजदीक पहुंचने तक पुराने मित्रों के पूरे फायदों का वास्तविक एहसास ही नहीं हुआ था। अधिकतर तो अपनी जिन्दगी में इतने उलझ गये थे कि, उनकी स्वर्णिम मित्रता कई वर्षों से उनके हाथ से निकल गयी थी। उनके द्वारा दोस्ती के लिये अपेक्षित समय और जोर नहीं देने के कारण बहुत गहरे अफसोस थे। हर कोई मरते वक्त अपने दोस्तों को याद कर रहा था।

५. अपने लिए भी जिएँ - (काश) मेरी इच्छानुसार मैं अपने आप को खुश रखता।

यह एक आश्चर्य की बात आम है, कई लोगों को जीवन के अन्त तक यह पता नहीं लगता है कि खुशी भी एक choice है। लोग अपने पुराने तौर-तरीकों व आदतों से चिपके रहते हैं। वे अपने परिजनों व परिचितों के तथाकथित सम्मान

(लिहाज) के चक्कर में अपनी भावनाओं के साथ भौतिक जीवन को भी स्वाहा कर देते हैं। परिवर्तन के डर से वे दूसरों व अपने खुद के लिये नाटक करते हैं कि, वे संतुष्ट हैं। जब एकदम अकेले होते तब ढंग से हंसते, और वापस मूर्खता की चादर ओढ लेते।

मित्रो, ये पूरे जीवन के निचोड़ से निकाला गया सार है। हम सब अपने जीवन को नये सिरे से डिजाइन कर सकते हैं। हर अफसोस से छुटकारा पा सकते हैं। अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। अब आप जीवन की कला तय कर सकते हैं। अपना जीवन डिजाइन करें - Design Own Life!

– महेश चौधरी

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०५/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये– सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)– पुरस्कार प्राप्त करिये

१	र १		१	र १	■	२	थि २	२	■
३ अ		क ३	■	४	ल ४		■	५	हीं ५
६	वा ६		७ स्था	■	प ७		७	त ७	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. इस अद्भुत सृष्टि का रचयिता कौन है?
२. पृथिवी पहले उत्पन्न हुई अथवा मनुष्य?
३. सृष्टि के प्रारम्भ में कितने मनुष्य उत्पन्न हुए?
४.सृष्टि के पूर्व क्या था?
५.क्या कभी ईश्वर के कर्तव्य कर्मों का अन्त होता है?
६.आदि सृष्टि के मनुष्य किस अवस्था(आयु)के उत्पन्न हुए?
७.जीवात्माओं के पूर्व सृष्टि के किए हुए कर्मानुसार वर्तमान सृष्टि में योनि प्रदान करता है इससे परमेश्वर पर कौन सा दोष नहीं आता?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१९ का सही उत्तर

१. अविरोध २. अवकाश ३. विरोध ४. नहीं
५. अन्यादि ६. सांख्य ७. परमाणु ८. अन्न

"विस्तृत नियम पृष्ठ १९ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जून २०१९

सबकी उन्नति में अपनी उन्नति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और प्रत्येक मनुष्य का यह दायित्व बन जाता है कि हम एक-दूसरे का सहयोग करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते हैं- 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।' वास्तव में यदि व्यवहारिकता के स्तर पर हम देखें तो व्यक्ति की केवल अपनी उन्नति समाज की उन्नति के बिना सार्थक नहीं है। एक व्यक्ति अमीर और शिक्षित बन भी जाता है मगर उसके शहर के अन्य नागरिक या पड़ोसी यदि गरीब और अशिक्षित रह जाते हैं तो उनमें घिरा हुआ वह अकेला उन्नत व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता है। उसे उन लोगों द्वारा किए गए अनर्गल व अशोभनीय कार्यों के कारण तथा उनके द्वारा हत्या व चोरी आदि किए जाने के भय के बने रहते, वह कभी भी चैन की नींद नहीं सो सकेगा। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य का विकास सामूहिक उन्नति में ही निहित है क्योंकि समाज में एक-दूसरे के सहयोग के बिना चल पाना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव भी है। इसलिए अपनी उन्नति के साथ-साथ सभी की उन्नति के लिए प्रयास करते रहना अपेक्षित है....

सामाजिक प्राणी होने के नाते तथा मनुष्य होने के कारण व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह दूसरों के दुःखों को दूर करने के लिए सदा तत्पर रहे। यदि व्यक्ति ऐसा नहीं करता है तो उसे स्वार्थी कहा जाता है। समाज में व्यक्ति के स्वार्थ को अधर्म और परार्थ को धर्म के रूप में आंका जाता है। व्यक्ति को केवल अपने ही स्वार्थों तक सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि परार्थ के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। जो व्यक्ति केवल अपनी ही उन्नति चाहता है वह कभी भी परार्थ का कार्य करने के लिए उद्यत नहीं हो सकेगा। बल्कि इसके विपरीत अपने स्वार्थ को पूर्ण करने के लिए वह कई प्रकार के अनैतिक कार्यों का भी सहारा लेगा। हम अपने चारों ओर देखते हैं कि ऐसा स्वार्थी व्यक्ति अपनी एषणाओं को पूर्णता देने के लिए कई प्रकार के ऐसे घृणित कार्य भी कर बैठता है जिनकी अपेक्षा सभ्य कहलाने वाले मानव से नहीं की जा सकती है। यदि अपने स्वार्थ में ही व्यक्ति डूब जाए तथा इस प्रकार के अमानवीय कृत्य करने लगे तो भला उसमें और पशु में क्या अन्तर रह जाऐगा?

आज समाज में जो एक-दूसरे को लूटने-खसूटने की भावना बढ़ रही है उसका कारण केवल और केवल मात्र यही है कि व्यक्ति दूसरे के हित को दरकिनार कर बैठा है। चाहे वह परिवार का झगड़ा हो, सामाजिक संस्थाओं का या फिर राष्ट्र का, सबके पीछे यह स्वार्थ की भावना ही कार्य कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि बस सब-कुछ मेरे ही अधिकार में आ जाए। व्यक्ति की यह एकाकी और कुत्सित भावना अनेक प्रकार के बैर-वैमनस्य को प्रश्रय देने वाली है। इसका निराकरण इसी बात से हो सकता है कि व्यक्ति अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज की सामूहिक उन्नति की भावना को अपने मन में जगह दे। इसी भावना से व्यक्ति के मन में सन्तोष की भावना भी आ सकती है अन्यथा एषणा और स्वार्थ के जंगल में भटकने वाला व्यक्ति कभी भी तृप्त नहीं हो सकेगा। जहाँ स्वार्थ की भावना एक अन्तहीन अतृप्ति के जंगल में भटकाने वाली दौड़ है वहीं परार्थ की भावना व्यक्ति का ठहराव तथा सन्तुष्टि है। सुख और शान्ति का आधार त्याग है। यदि समाज में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे की उन्नति करने की भावना को भी आत्मसात् कर ले तो सब प्रकार की कटुताएँ, लड़ाई-झगड़े स्वतः ही समाप्त हो जाऐंगे अन्यथा यदि इसके विपरीत चलते रहे तो ये कटुताएँ और भी अधिक विकराल रूप धारण करती चली जाऐंगी। मैं बढ़ूँ तो दूसरा भी बढ़े, मैं चलूँ तो दूसरा भी चले, मैं फलूँ तो

दूसरा भी फले इसी भावना से समाज का चरम उत्कर्ष होना सम्भव है। इस सम्बन्ध में मानव शरीर का दृष्टान्त देना यहाँ पर बहुत ही सार्थक लग रहा है। शरीर का कोई एक अंग यदि यह सोचे कि बस मैं ही बढूँ, दूसरा नहीं तो इस स्वार्थ की भावना से वह आप भी विकारों से ग्रसित हो जाऐगा। हाँ उसके स्वस्थ रहने का रहस्य इसी में है कि वह स्वयं तो बढ़े पर दूसरे को भी आगे बढ़ने में सहयोग करे। इससे पूरा शरीर स्वस्थ और सबल रहेगा और वह स्वयं भी स्वस्थ रह सकेगा। शरीर के किसी भी अंग को हम ले लें उसमें यदि स्व की भावना आ जाए तो वह सारे शरीर के साथ-साथ अपना अस्तित्व भी खो बैठेगा। ठीक यही बात हम समाज पर भी लागू कर सकते हैं। एक का बढ़ना पर्याप्त नहीं है और न ही उसका वह बढ़ना उसके स्वयं के लिए भी हितकर है, हाँ सामूहिक विकास में ही सबका भला है और उस सबके भले में ही उसका अपना भला भी छिपा हुआ है।

सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाला व्यक्ति अपने अधिकारों को तो साथ लेकर चलेगा मगर वह समाज और संसार के प्रति अपनें कर्त्तव्यो को भी हमेशा स्मरण रखेगा। इसी से समाज में जीओ और जीने दो की भावना कार्यान्वित हो सकती है। अपनी उन्नति के साथ-साथ जो दूसरे की उन्नति की भी कामना करेगा, न केवल कामना ही करेगा बल्कि उसके लिए अपना सहयोग और सक्रिय प्रयास भी करेगा उसका न केवल यह जीवन संवरेगा बल्कि मानो उसने अपने परलोक को भी संवार लिया। क्योंकि उसी के हृदय में यह भावना आ सकेगी-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

संसार के सभी प्राणी सुखी हों, स्वस्थ हों, भद्रभाव से परिपूर्ण हों तथा इस सृष्टि में कोई भी किसी भी प्रकार के दुःख से पीड़ित न हो... ऐसी भावना प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में होनी चाहिए क्योंकि इसी में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व के सामूहिक विकास का अमूल्य रहस्य छुपा हुआ है। इसी से सामूहिक रूप में सबको सुख, शान्ति और आत्मोन्नति का प्रसाद प्राप्त होगा तथा सद्भावना, संवेदना और समरसता की उज्ज्वल भावनाएँ प्रवाहित होंगी। यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि दूसरे की उन्नति के लिए हम परतन्त्र क्यों रहें। हमें क्या पड़ी है कि हम दूसरों की उन्नति के लिए अपने विकास पर अंकुश लगाएँ? हालाँकि हम ऊपर विवेचन कर आए हैं कि दूसरों की उन्नति के लिए प्रयास करना किसी प्रकार से भी व्यक्ति के अपने अहित में नहीं है बल्कि उस उन्नति में उसकी अपनी उन्नति भी किसी न किसी रूप में शामिल है। मगर फिर भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बहुत ही अद्भुत व्यवस्था देते हैं- 'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।' यह वाक्य इसलिए महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति इस भ्रम में न रहे कि दूसरे की उन्नति करने से उसकी उन्नति नहीं होगी वा उसकी स्वतन्त्र रूप से प्रगति करने पर रोक लगाने का प्रयास किया गया है। व्यक्तिगत उन्नति में सभी को किसी प्रकार की रोक या परतन्त्रता बहुत ही कष्टदायक लगती है। यह बात ठीक भी है, किसी ने बिल्कुल ही ठीक कहा है कि परतन्त्रता से बढ़कर दुनियाँ में और कोई दुःख नहीं है। इसी परतन्त्रता और स्वतन्त्रता का विश्लेषण करते हुए महर्षि जी ने इस वाक्य में पूरी बात स्पष्ट कर दी कि दूसरे की उन्नति में हम कहाँ पर परतन्त्र हैं और अपनी उन्नति करने में हम कहाँ तक स्वतन्त्र हैं। व्यक्तिगत उन्नति की महर्षि जी ने कोई सीमा निर्धारित नहीं की है। व्यक्ति स्वतन्त्र है कि वह जहाँ तक चाहे अपनी उन्नति कर सकता है मगर सामाजिक नियमों और राष्ट्र के संविधान आदि के अनुपालन में वह परतन्त्र रहे। यहाँ पर स्वतन्त्रता और स्वछन्दता में बहुत सुन्दर ढंग से भेद किया गया है। स्वतन्त्र होना किसी प्रकार की स्वछन्दता या उच्छ्रंखलता नहीं है बल्कि व्यक्तिगत अर्थात् स्वंय कि लिए हितकारी नियमों में व्यक्ति पूर्णरूप से स्वतन्त्र रहे मगर जो सर्वहितकारी नियम हैं उनके अनुपालन में किसी प्रकार उद्दण्डता और गुण्डागर्दी उन्हें स्वीकार नहीं है क्योंकि उससे ही सामाजिक अव्यवस्था को प्रश्रय मिलता है।

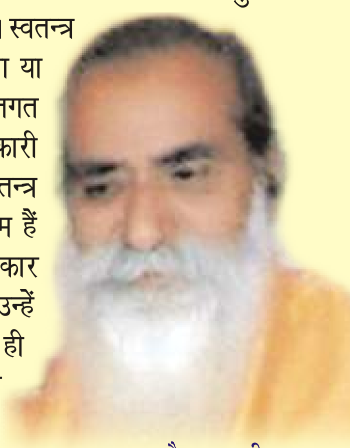

- महात्मा चैतन्यस्वामी
महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी, हि. प्र.-१७५०१८
चलभाष- ०९४१८०५३०९२

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

ईश्वर भक्ति ही शक्ति है

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भाग्भवेत्'
शास्त्रकारों के अनुसार-
मानव जीवन का अंतिम एवं परम लक्ष्य है ईश्वर का साक्षात्कार करना क्योंकि सभी पूर्ण एवं स्थायी सुख चाहते हैं और दु:खों से पूर्ण छुटकारा भी जो मात्र ईश्वर प्राप्ति से संभव है। ईश्वर की प्राप्ति श्रेष्ठ मार्ग पर चलकर ही हो सकती है। श्रेष्ठ मार्ग कौनसा है? श्रेष्ठ मार्ग वह है जिन रास्तों से श्रेष्ठ एवं महान् पुरुष चलते एवं गुजरते हैं। परन्तु श्रेष्ठ मार्ग पर चलना बड़ा कठिन है क्योंकि इस मार्ग में काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार एवं ईर्ष्या-द्वेष जैसे अनेकों अन्य शत्रुओं को निर्जीव बनाना अर्थात् उन पर विजय प्राप्त करना कोई सरल कार्य नहीं है। इन सब में बड़ा तथा शक्तिशाली शत्रु है अहंकार, जैसा कि ऋग्वेद (८ २१.१४) में लिखा है-

'नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्व l
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ll

अहंकार अर्थात् घमण्ड अर्थात्'मैं', जब कोई व्यक्ति स्वयं को धन, ज्ञान, वंश, सुन्दरता तथा परिवार आदि विषय में अन्यों से उत्तम मानने लगता है तब उस में अहंकार आ जाता है। अहंकारी व्यक्ति का जीवन असन्तुलित हो जाता है तब वह अनेकों विकारों का शिकार होकर अनुचित कार्य

करता है जो उसे पापमय जीवन में धकेल देते हैं। उसकी मति भ्रष्ट हो जाती है जिसके कारण वह अनुचित कार्य करता है परिणामस्वरूप उसे समाज में अपमान व हानि का सामना करना पड़ता है। तब उसे ईश्वर भी छोड़ देता है। इतिहास इन्हीं अहंकारी व्यक्तियों के विनाश का गवाह है जैसे रावण, दुर्योधन आदि। अहंकार तो देवताओं का भी विनाश कर देता है।

कबीरदास जी भी कहते हैं- मृत्यु ने तेरे बालों को पकड़ रखा है न जाने कब तुझे मार डाले। जब जीवन क्षणभंगुर है फिर बल धन आदि पर अहंकार क्यों? शरीर नश्वर है सम्पत्ति चंचल है केवल धर्म ही शाश्वत है।

प्रभु जब चाहे किसी भी वस्तु को वापस ले सकता है। इसलिए ईश्वर प्रदत्त नियामतों को विनम्र होकर स्वीकार करते हुए, ईश्वर का धन्यवाद करते हुए, उसे शीश झुकाते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। यही सुख:शांति का आधार है, और जीवन का लक्ष्य भी।

हम प्राय: भगवान को कोसते रहते हैं कि तूने हमें यह नहीं दिया वह नहीं दिया और अगर थोड़ा सा कष्ट आ जाए तो फिर देखो हम भगवान के ऐसे दुश्मन बन जाते हैं कि न जाने किन-किन शब्दों से उसे कोसते हैं। भूल जाते हैं कि यह तो हमारा कर्मफल है।

लुकमान की तरह बनें। एक दिन लुकमान के मालिक ने उसे जानबूझकर कड़वा फल दिया उसे भी वह बड़े स्वाद के साथ खाता रहा। मालिक ने कहा यह फल बड़ा कड़वा था। लुकमान ने कहा-मालिक जो मिठास तुमने मुझे पहले दी थी, उसके सामने यह कड़वाहट कुछ भी नहीं है। परन्तु हम भगवान की अनगिनत कृपाओं को तो भूल जाते हैं लेकिन एक दु:ख की कड़वाहट सदा याद रखते हैं।

एक दिन एक दु:खी व्यक्ति ने भगवान से पूछा आप हमें रुलाते क्यों हो तो भगवान ने कहा कि जब किसी वस्तु को जंग लग जाती है तो उसे तपाते हैं ऐसे मैं भी जंग लगे लोगों को दु:ख की आग में तपा तपा कर सही करता हूं।

परमेश्वर की कृपा व मित्रता किन्हीं विरले श्रेष्ठ पुरुषों को मिलती है और वह विलक्षण गुणों से युक्त हो जाते हैं। जिस प्रकार आकाश से वर्षा की धारा भूमि पर प्रवाहित होती है उसी प्रकार दिव्य विचार मनुष्य के मानस पटल पर प्रवाहित होते हैं जो अनमोल सम्पत्ति है-

'दिया न बाती, न तेल लेकिन उजियारा ही उजियारा'

क्योंकि भीतर एक ज्योति जल जाती है।

यह ज्ञान ज्योति केवल मानव की सर्वोत्तम सम्पत्ति है। मानव श्रेष्ठ है इसलिए वह श्रेष्ठ कार्य कर सकता है। ईश्वर ने उसे विवेक तथा प्रज्ञा बुद्धि प्रदान की है।

'मानव जीवन दुर्लभ है मिले न बारम्बार
ज्यों पका फल लगे न दूजी बार।'

यह पहला और अंतिम मौका है। यदि इसे सफल बनाना है तो कण-कण में विद्यमान सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपासना करें। बिना ईश्वर की उपासना के दुःख दूर नहीं हो सकता अन्यथा वही चौरासी का चक्कर। इस सबका अर्थ यह नहीं कि संसार छोड़ दो सांसारिक कार्यों से विमुख हो जाओ परन्तु यह है कि अध्यात्मिकता तथा भौतिकता का सुन्दर व सन्तुलित समन्वय करके चलो, संसार को अच्छी तरह चलाओ-धर्मानुसार शरीर से उत्तम कर्म करो मन तथा जिह्वा से 'ओ३म्' नाम जपो। आत्मा को बलवान बनाओ। जब आत्मा बलवान होती है तो मन शिव संकल्पों वाला होता है। जब मन शिव संकल्प वाला होगा तो श्रेष्ठ रास्ते पर चलेगा। परोपकार करो, सेवाधारी बन ईश्वर के बन्दों को सुखी करो। अगर हम ईश्वर के प्राणियों की सेवा करेंगे तो क्या ईश्वर हमें इनाम नहीं देगा। ईश्वर भक्ति में बड़ी शक्ति है। सच्ची भक्ति क्या है। सत्य आचरण, प्रातः सायं ईश्वर उपासना, अग्निहोत्र, ऐश्वर्य की उन्नति, प्राण एवं अपान की पुष्टि, अध्यापक, उपदेशक और विद्वानों का सत्संग तथा जीवात्मा को जानने का प्रयास करना आदि।

आजकल लोग अविद्या के कारण भगवान की मूर्ति बनाकर उस पर चढ़ावा चढ़ाते है और कई लोग भगवान के नाम पर धन इकट्ठा करते हैं। व्यापार चलता है ईश्वर के नाम से। हे

नासमझ लोगो ईश्वर तो दाता = देने वाला है।

हम सबकी आत्माओं पर जो पाप के धब्बे लगे हैं, उन्हें हम भक्ति के द्वारा साफ करें ताकि ईश्वर पास हम जायें तो मुंह दिखाने लायक हों।

पुरुषार्थी पुरुष को परमेश्वर शीघ्र प्राप्त होता है। अतः जो जीव उसकी प्राप्ति के लिए तन-मन व धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करता है परमात्मा उनको शीघ्र प्राप्त होता है। तब वह प्रभु अनन्तशक्ति रूपी हाथों से उस जीव को उठाकर अपनी गोद में सदा के लिए ले लेता है फिर उसे किसी प्रकार का दुःख होने देता। इसलिए वेद कहते हैं-

न त्वदूते, अमृता मादयन्ते

महर्षि स्वयं ईश्वर भक्त थे। मेरी दृष्टि से तो वह केवल भक्त नहीं अपितु भक्त शिरोमणि कहलाने के हकदार थे। सन्त महात्माओं ने जितने भक्त के लक्षण बताये हैं वे सब महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के जीवन में इस प्रकार ओतप्रोत हैं जैसे मणिमाला में मणि। प्रभु भक्ति का कोई भी ऐसा सद्गुण रूपी सुमन नहीं था जो महर्षि के जीवनोद्यान में विकसित न हुआ हो।

धन्य है तुझे ऐ ऋषि स्वयं जगे जग को जगा दिया।
सौराष्ट्र में पैदा होकर भारत को सुराष्ट्र बना दिया।

- टंकारा श्री अरुणा सतीजा
जयपुर 302004 मोबाइल 8112202449

उदयपुर की आर्य समाजों के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, सज्जन नगर, उदयपुर

प्रधान-श्री देवीलाल गर्ग, मंत्री-श्री धीरज कुमार अरोड़ा, कोषाध्यक्ष- श्री अशोक उदावत। इसके अतिरिक्त श्री हुकुमचन्द्र शास्त्री को संरक्षक एवं श्री हेमांग जोशी को उप प्रधान के रूप में दायित्व सौपा गया।

आर्य समाज, पिछोली, उदयपुर

प्रधान-श्रीमती मनोरमा गुप्ता, मंत्री श्री यशवन्त श्रीमाली, कोषाध्यक्ष-श्री सुरेश चौहान। निर्वाचन के पश्चात् सभी आर्यजनों का सहभोज भी आयोजित किया गया।

सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

- भवानीदास आर्य

अति शीघ्र आवश्यकता है

आर्य समाज कोटद्वार में सेवक पद नियुक्ति हेतु आर्य विचारों वाले निष्ठावान सेवक की आवश्यकता है,
वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। संपर्क करें : आर्य हिमांशु अग्रवाल ९८३७२५६६००

समाचार

डॉ. रघुवीर वेदालंकार सम्मानित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. रघुवीर वेदालंकार को उनकी संस्कृत वांङ्मय में निपुणता तथा शास्त्र पाण्डित्य हेतु ४ अप्रैल २०१८ को वर्ष २०१८ के 'राष्ट्रपति-सम्मान' से अलंकृत किया गया। एतदर्थ महामहिम उपराष्ट्रपति माननीय वैकेया नायडू ने डॉ. रघुवीर को प्रमाण पत्र प्रदान किया। हमें समस्त आर्य जगत् सहित मान्य डॉ. साहब पर गर्व है। हम सम्पूर्ण वेदालंकार परिवार को बधाई देते हुए डॉ. साहब के निरामय दीर्घायुष्य हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हैं। - अशोक आर्य

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के वार्षिक अधिवेशन में निर्वाचन अधिकारी श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ

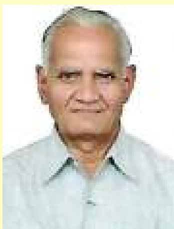

प्रकाश न्यास की देखरेख में सम्पन्न हुए वार्षिक निर्वाचन में श्री भंवर लाल आर्य, श्री भूपेन्द्र शर्मा एवं श्री रमेश जायसवाल को क्रमशः प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष के पद का दायित्व सर्वसम्मति से सौंपा गया। इससे पूर्व साधारण सभा की बैठक में मंत्री श्री संजय शांडिल्य ने वार्षिक प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया। कोषाध्यक्ष श्री अम्बालाल सनाढ्य ने आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्ष समाज की पूर्व प्रधान श्रीमती ललिता मेहरा ने पिछले कार्यकाल में सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

-मुकेश पाठक, प्रचार मंत्री

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर में आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर प्रभात फेरी, हवन, भजन, प्रवचन आदि के प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी में बालिका शिक्षा, नशा मुक्ति, प्रदूषण दूर करने सहित आर्य समाज के सिद्धान्तों पर आधारित नारों से हिरणमगरी के मुख्य मार्गों को गुंजायमान किया। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने ध्वजोत्तोलन के पश्चात् 'नवजागरण में आर्य समाज के योगदान' पर विशेष चर्चा की।

-मुकेश पाठक, प्रचार मंत्री

शिविर सम्पन्न हुआ

वानप्रस्थ साधक आश्रम,रोजड़ में आयोजित, २४ मार्च २०१८ से प्रारम्भ क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर ३१ मार्च २०१८ को सम्पन्न हुआ। इस शिविर में विभिन्न राज्यों से १३२ व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमें हर वर्ग के लोग सम्मिलित थे। आचार्य सत्यजित् जी ने शंका समाधान, स्वामी विष्वंङ्ग जी ने मंत्रार्थ, स्वामी विवेकानन्द जी ने योगदर्शन, स्वामी मुक्तानन्द जी ने ध्यान उपासना प्रशिक्षण, आचार्य संदीप जी ने न्याय दर्शन, आचार्य सत्येन्द्र जी ने केन उपनिषद्, डॉ. अर्चना जी ने आत्म निरीक्षण तथा माता जयाबेन जी एवं आचार्य कर्मवीर जी ने व्यायाम प्राणायाम की कक्षाएं लीं।
इस अवसर पर सभी साधकों को पूज्य स्वामी सत्यपति जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। - सत्यजित् आचार्य

शोक समाचार

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक, जो कि न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण मित्तल के बड़े भाई हैं, की धर्मपत्नी डॉ. वेदवती जी का निधन दिल्ली में दिनांक ४ अप्रैल २०१८ को हो गया। डॉ. वेदवती का पांडित्य भी सर्वविदित है। वे १९७७ से दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी विश्वविद्यालय में अध्ययनरत तथा श्री अरविन्द महाविद्यालय में संस्कृत की विभागाध्यक्ष रहीं। उन्होंने साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली के 'रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट' के प्रबन्ध न्यासी के तौर पर समाज सेवा के अनेक अभियान चलाए। उनके द्वारा उपनिषदों पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए। ऐसी विदुषी समाज सेविका के जाने से न केवल वेदप्रताप जी के परिवार में बल्कि आर्य जगत् में भी रिक्तता का अनुभव किया जायेगा। हम सत्यार्थ सौरभ एवं न्यास परिवार की ओर से डॉ. वेदप्रताप जी के इस दुःख में संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। - अशोक आर्य

नवनीत जी को पितृ शोक

न्यास के पुरोहित और सत्यार्थ सौरभ पत्रिका के प्रबन्ध सहयोगी श्री नवनीत आर्य के पूज्य पिताजी का निधन एक लम्बी बीमारी के पश्चात् २५ मार्च १८ को दिल्ली में हो गया। काफी दिनों तक उनका इलाज दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में होता रहा। वहां से वे स्वस्थ होकर घर आ गए थे पर अकस्मात् ही यह बज्रपात हो गया। वैदिक रीति से उनका संस्कार करने के पश्चात् ऋषि निर्देशानुसार तीन दिन में ही शोक समाप्त कर दिया गया। तत्पश्चात् पैतृक गांव में एक वृहद् यज्ञ का आयोजन कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर बिहार के युवा आर्य नेता पंडित संजय सत्यार्थी उपस्थित रहे। इस दुःख की घड़ी में न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य एवं उदयपुर के आर्यजन उनकी पीड़ा में सहभागी हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे शोकग्रस्त परिवार को धैर्य धारण करने की क्षमता एवं दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करने की कृपा करें। - भवानीदास आर्य

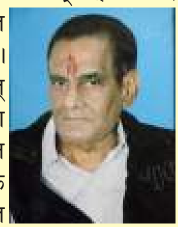

ध्यान शिविर का आयोजन

ध्यान उपासना की आर्ष पद्धति के महत्व को दृष्टिगत् रखते हुए उसे स्पष्ट रूप से प्रकाशित करने की भावना से १ से १५ जुलाई २०१८ की अवधि में १५ दिवसीय 'वैदिक योग विद्या-ध्यान-उपासना की आर्ष पद्धति' नामक शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में ध्यान उपासना की तीन आर्ष पद्धतियां बताई जायेंगी जो क्रमशः योग (समाधिपाद), क्रियायोग (साधनपाद पूर्वार्द्ध) एवं अष्टांग योग (साधनपाद उत्तरार्द्ध) पर आधारित होंगी । यह शिविर डॉ. हरिशचन्द्र (आर्य समाज ह्यूस्टन,अमेरिका) के निर्देशन में लगेगा। पूर्व पंजीकरण हेतु संपर्क करें।

मोबाइल (वाट्सअप) +१८३२८७४३२४८

चतुर्वेद शतकम यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, चौक बाजार, बुलन्दशहर के तत्वावधान में ४ से ६ मार्च २०१८ को चतुर्वेद शतकम राष्ट्र कल्याण यज्ञ का आयोजन किया गया । इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य चन्द्रपालशास्त्री एवं आचार्य निरंजनदेव शास्त्री ने उद्बोधन प्रदान किए। - गणेशदत्त गोयल, प्रधान

हलचल

आर्य समाज, महर्षि पाणिनि नगर के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, महर्षि पाणिनी नगर का द्विवार्षिक चुनाव श्री राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव, चुनाव अधिकारी द्वारा सम्पन्न कराया गया। प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष का दायित्व सर्वसम्मति से क्रमशः श्री कैलाश चन्द्र आर्य, श्री नरेन्द्र आर्य एवं श्री रमेशचन्द्र गहलोत को सौंपा गया। सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी के सदस्यों को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं। - डा. अमृतलाल तापड़िया

शहीदों की याद में वाहन रैली

जोधपुर की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान में शहीदों की स्मृति में वाहन रैली का आयोजन किया गया। रैली आर्य समाज, महर्षि पाणिनी नगर से प्रारम्भ होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास भवन पर सम्पन्न हुई। स्मृति भवन न्यास के मंत्री श्री किशनलाल आर्य ने सभी आर्यजनों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य द्वारा यज्ञशाला हेतु दान

आर्य समाज, महर्षि पाणिनी नगर, जोधपुर में नवीन यज्ञशाला का निर्माण किया गया है जिसके उद्घाटन के अवसर पर १ से ३ मार्च २०१६ तक अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ५१ फुट ऊंचे ओ३म् ध्वज का ध्वजारोहण आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश व श्री विजयसिंह भाटी द्वारा किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य इस अवसर पर उपस्थित हुए और उन्होंने यज्ञशाला की सुन्दरता

की प्रशंसा करते हुए एक लाख इक्यावन हजार रु. प्रदान किए तथा अनेकों दानदाताओं को 'दान श्रेष्ठी' सम्मान से सम्मानित किया।

स्वाधीनता सैनानी श्री हरिसिंह आर्य की जयन्ती मनाई गई

प्रतिवर्ष की भांति दिनांक ६ अप्रेल २०१६ को आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर में स्वाधीनता सैनानी श्री हरिसिंह जी आर्य का जयन्ती-समारोह मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध लेखिका 'सत्यार्थ भूषण' सरोज जी वर्मा द्वारा लिखित १७ वीं पुस्तक 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का विमोचन राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री एस. एस.कोठारी जी के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूर्व सांसद श्री रासासिंह रावत, प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी, शिक्षाविद् श्री एम.एल. गोयल के अतिरिक्त श्रीमती अरुणा देवड़ा, वैदिक विद्वान् श्री आर.एस.कोठारी, डॉ. मुरारीलाल जी पारिक, दयानन्द पैराडाइज आबू रोड के संचालक श्री मोतीलाल आर्य आदि उपस्थित थे। - ओ. पी. वर्मा, जयपुर

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा नागौर के तत्वावधान में परबतसर में दिनांक १ मई २०१६ से ५ मई २०१६ तक आचार्य सोमदेव जी के ब्रह्मत्व में 'अथर्ववेद पारायण यज्ञ' का आयोजन किया जा रहा है। पंचदिवसीय, पंचकुण्डीय इस यज्ञानुष्ठान में भजनोपदेशक के रूप में श्री भानुप्रकाश जी, बरेली भी भाग लेंगे। -किशनाराम आर्य

निःशुल्क रोग निदान शिविर सम्पन्न

आर्य समाज बडोदरा के तत्वावधान में गुजरात किडनी तथा सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पीटल के सहयोग से निःशुल्क विविध रोग निदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रक्तचाप, ब्लड शुगर, बीएमआई, बीएमडी आदि जांचें निःशुल्क की गईं। बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिकों एवं महिलाओं ने भाग लिया। शिविर के निदेशक डॉ. इन्द्रजीत सिंह थे।

- भगवानस्वरूप शर्मा, मंत्री आर्य समाज, बड़ोदरा

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज शिकागोलैंड, के तत्त्वावधान में **२८ वें आर्य महासम्मेलन का आयोजन जुलाई २५-२८, २०१६ को,** शिकागो, अमेरिका में होगा। सम्मेलन का विषय है - वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपनद्य इस मुख्य विषय के सन्दर्भ में विशिष्ट चर्चा के विषय होंगे- वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तीकरण। विश्व के कई प्रतिष्ठित अतिथि और स्पीकर आमंत्रित किये गये हैं। इस कार्यक्रम में योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं, और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.aryasamaj.com/ams पर जाएँ। पंजीकरण आनलाइन है और अनिवार्य है। - डा. सुखदेव सोनी, भुवनेश खोसला

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; नारायण विहार, दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री बाबूलाल आर्य; पिपल्यामण्डी (मन्दसौर), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री गोवर्धन लाल झंवर; आष्टा, श्री इन्द्रजित् देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री हर्ष वर्धन आर्य; नेमदारगंज, श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), डॉ. देवेन्द्र कुमार; भीलवाड़ा (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री राज नारायण चौधरी; शाजापुर, श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; हनुमान जी मन्दिर के पीछे (बीकानेर), प्रधान आर्यसमाज; महर्षि दयानन्द मार्ग (बीकानेर), उषा देवी सोनी; बागड़ी मोहल्ला (बीकानेर), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, सुनिता सोनी; जेल रोड़ (बीकानेर), रूपादेवी सोनी; पंचायत भवन के पीछे (बीकानेर), श्री ज्योति कुमारी; डेरोली, अहीर, श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्द शहर, श्री ब्र. विशाल आर्य; गुडा विश्नोईया, श्री किशनाराम आर्य; बिल्लू, श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर, श्री भंवर लाल पारीक, रायला, श्री पं. हरि नारायण; देवास, हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १७ पर अवश्य पढ़ें।

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम-परमाणु-विज्ञान
लेखक-आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
प्रकाशक-वेदविज्ञान प्रकाशन,
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट्स अलकनन्दा
नई दिल्ली-११००१९
मूल्य-८० रुपए
पठनीय व संग्रहणीय अभूतपूर्व पुस्तक।

जो जाति निरन्तर एक हजार साल तक पराधीन रही हो, जिसका सर्वस्व हरण कर लिया गया हो, उसे पुनः संगठित करके स्वतन्त्र और सम्मानजनक स्थिति प्रदान करने का कार्य अत्यन्त दुष्कर होता है। गुलामों का न कोई धर्म होता है, न इतिहास, न संस्कृति, न गौरवपूर्ण नाम, न स्वाभिमान। ज्ञान-विज्ञान की तो बात ही व्यर्थ है। जाति को गुलाम मानसिकता से मुक्त कराके उसके खोए हुए गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का दुष्कर कार्य करने वाले लोग निश्चय ही वन्दनीय होते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही वन्दनीय महापुरुष हैं, जिन्होंने इस आर्य जाति के खोए हुए गौरव, धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान, ज्ञान और विज्ञान को सशक्त रूप में पुनः स्थापित करने में अपना जीवन ही बलिदान कर दिया।

उनके पश्चात् उनके शेष कार्य को पूरा करने की आवश्यकता थी, जो नहीं किया जा सका।

विज्ञान के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द आर्ष विज्ञान को पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे परन्तु उनके असमय में ही दिवंगत हो जाने से वह कार्य नहीं हो सका। इस विषय पर उनके विचार उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों में प्रकीर्ण हैं।

आचार्य श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने महर्षि दयानन्द के परमाणु विषयक प्रकीर्ण विचारों को संकलित करके उन्हें एक क्रम से शृंखलाबद्ध करने का अत्यन्त आवश्यक और उपयोगी श्रम किया है। 'परमाणु-विज्ञान' नाम से प्रकाशित उनके ग्रन्थ में उक्त विचार ग्रथित किए गए हैं। इससे सृष्टि संरचना विषयक आर्ष वैदिक विज्ञान को ठीक-ठीक समझ पाना सम्भव हो गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ कुल चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय का नाम 'परमाणु विवेचन' है। द्वितीय अध्याय का शीर्षक है 'महत् तत्त्व और अहंकार विवेचन'। तीसरे अध्याय का विषय है 'परमाणु परिमण्डल विवेचन' और चतुर्थ अध्याय को 'परमाणुगत व्यवस्था विवेचन' नाम दिया गया है। आशा की जा सकती है कि इस विवेचन से पाठकों को परमाणु विषयक विवेक प्राप्त होगा।

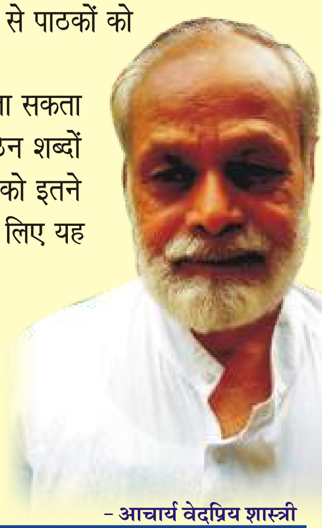

पुस्तक को प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है, इससे इस गूढ़ विषय को सरलता से समझा जा सकता है। इसमें प्रत्येक विषय को युक्ति, तर्क और प्रमाण पुरस्सर प्रस्तुत किया गया है और कठिन शब्दों की सरल व्याख्या की गई है। इससे पुस्तक का महत्व बढ़ गया है। हमने परमाणु विज्ञान को इतने क्रमबद्ध व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने वाला कोई अन्य ग्रन्थ अभी तक नहीं देखा, हमारे लिए यह एक अभूतपूर्व कार्य है।

पाठकों से निवेदन है कि वे पुस्तक का स्वाध्याय करें और अपने विद्वान् लेखक का श्रम सार्थक करें। हम आचार्य श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के दीर्घ जीवन की कामना लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें स्वस्थ प्रसन्न और इसी सुमति से सदा सन्नद्ध रखे, ताकि भविष्य में उनके द्वारा इस क्षेत्र में कुछ और आवश्यक उपयोगी अच्छा कार्य हो सके। धन्यवाद के साथ हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

- आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

फरिश्तों का फल (Fruit of Angels)

पपीता से शायद ही कोई अपरिचित होगा। पका हुआ पपीता मनुष्य के लिए इतना लाभकारी है कि इसे 'फरिश्तों का फल' कह दिया जाता है। पपीता अनेक पोषक तत्त्वों तथा एंटीओक्सीडेन्ट्स का भण्डार है। केरोटीन, फ्लेवनोइड, विटामिन सी, विटामिन बी, फोलिक एसिड, खनिज पदार्थ यथा पोटेशियम, मैग्नीशियम, कापर तथा फाइबर इसमें प्रचुरता से पाए जाते हैं। अनेक रोगों को रोकने तथा अनेकों का उपचार करने में यह फल समर्थ है।

पपीता सेवन के लाभ

एक मध्यम आकार के पपीते में १२० कैलोरी होती है। ऐसे में अगर आप वजन घटाने की बात सोच रहे हैं तो अपने भोजन में पपीते को जरूर शामिल करें। इसमें मौजूद फाइबर्स वजन घटाने में मददगार होते हैं।

आज के समय में सर्वत्र हृदय रोगों को लेकर चिन्ता बनी हुयी है। कोलेस्ट्रोल में वृद्धि इसका प्रमुख कारण है। पपीते के सेवन से कोलेस्ट्रोल कम होता है जिस कारण हृदय रोग की संभावना भी कम होती है। यद्यपि यह फल मीठा होता है फिर भी मधुमेह में लाभकारी है। जिनका मधुमेह अभी बार्डर लाइन पर ही है वे पपीते के सेवन से इसे रोक सकते हैं। आयु बढ़ने के साथ जो आँखों के रोग होते हैं पपीता उनमें भी सहायक होता है।

कुछ शोध बताते हैं कि कि निरन्तर पपीते के सेवन से जहाँ व्यक्ति की 'इम्यूनिटी' में अभिवृद्धि होती है वहीं Flavonoids के कारण कैंसर की रोकथाम व उपचार में सहायक है।

पपीता में पापेन एंजाइम तथा फाइबर होने के कारण यह पेट के रोगों के लिए अत्यन्त लाभकारी है। पापेन के कारण प्रोटीन अमीनो एसिड्स में आसानी से टूटती है अतः पाचन में सहायक है। फाइबर के कारण कब्ज दूर करने में रामबाण कह सकते हैं।

पपीते में विटामिन 'ए' पाया जाता है जो 'सीबम' के उत्सर्जन में सहायक होने से बालों को नम रखता है और बाल स्वस्थ रहते हैं। इसी प्रकार विटामिन 'सी' की प्रचुरता के कारण यह 'कोलेजन' के निर्माण एवं अनुरक्षण में सहायक है। इसके विटामिन 'सी', बीटा केरोटीन जैसे एन्टीओक्सीडेंट्स व विटामिन 'ई' त्वचा के लिए अत्यधिक लाभदायक है। ये Free radical damage को रोकते हैं, इसी कारण से इसे 'एन्टी एजिंग' भी कहा जाता है, अर्थात् त्वचा में चमक तथा कम झुर्रियाँ पड़ने के कारण व्यक्ति की आयु कम प्रतीत होती है।

सावधानियाँ

पपीता में एक एंजाइम 'पापेन' प्रचुरता से पाया जाता है जो खून को पतला करता है। अतः जो लोग एन्टीकागूलेंट दवा जैसे एस्प्रिन ले रहे हों उन्हें अथवा जिनकी सर्जरी होनी है उन्हें पपीता का सेवन नहीं करना चाहिए।

कहते हैं 'अति सर्वत्र वर्जयेत'। पपीता का अत्यधिक सेवन, विशेष रूप से अधपके पपीते का, हानिकारक भी हो सकता है। क्योंकि कच्चे पपीते में 'लेटेक्स' नाम का केमीकल होता है। इसके कारण गर्भवती स्त्रियों में गर्भाशय में contractions होने से गर्भपात की सम्भावना हो सकती है। इसी प्रकार पपीते में उपस्थित पापेन जहाँ पाचन में सहायक होता है वहीं इसी के कारण इसका अत्यधिक सेवन लड़कों में infertility पैदा कर सकता है। अतः पपीते का अधिक मात्रा में लम्बे समय तक सेवन करने वालों को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

संकलन - अशोक आर्य

जीवन की सार्थकता तत्व ज्ञान में

कथा सरित

भारत का प्राचीन इतिहास बताता है कि ब्रह्म ज्ञान में केवल पुरुष ही नहीं बल्कि महिलायें भी बहुत आगे थीं। वह तत्व ज्ञान से अपने जीवन को सार्थक करने के लिये कृत संकल्प रहती थीं। गार्गी परम तत्व ज्ञानी थीं फिर भी जहां भी उन्हें किसी ब्रह्मज्ञानी के होने का पता लगता वे सत्संग के लिये उनसे मिलने को आतुर रहती थीं। एक बार कुछ महान् ज्ञानियों के बीच उन्होंने एक बहुत बड़े दार्शनिक के ब्रह्मज्ञान की प्रशंसा सुनी तो निश्चय कर लिया कि मैं उनके दर्शन अवश्य करूँगीं। वह ब्रह्मज्ञानी १०० योजन की दूरी पर रहते थे। उन दिनों यातायात के साधन इतने सुलभ न थे। इसलिये पैदल ही यात्रा करनी पड़ती थी किन्तु महान् पुरुषों के पास जाना भी यज्ञ समझा जाता था। विद्वान् सत्संग की महिमा का बखान करते हुए कहा करते थे-

सन्त मिलन को जाइये, तजि ममता अभिमान।

गार्गी उन ब्रह्मज्ञानी से मिलने के लिये अपने दृढ़ निश्चय के अनुसार एक दिन पैदल ही चल पड़ी। महीनों की यात्रा के बाद वह ब्रह्मज्ञानी के आश्रम में पहुँच ही गयीं।

आश्रम विस्तृत हरा भरा था। देखने में बहुत सुन्दर था। वहां पाठशाला भी चलती थी। पहुंचने पर गार्गी को आश्रम के अतिथि भवन में ठहराया गया। आश्रम के ब्रह्मज्ञानी कुलपति को सूचना दी गई की परम विदुषी गार्गी आपके दर्शनों के लिये सौ योजन पैदल चल कर आई हैं। गुरुजी ने दर्प से शिष्यों से कहा- कि उनसे कह दें कि हमारे गुरुजी स्त्री दर्शन नहीं करते। वह ४-६ दिन आश्रम में रहकर सुस्ता लें फिर जब इच्छा हो वापिस चली जायें।

शिष्यों ने आश्रम के अतिथि भवन पहुँच कर उन्हें अपने गुरुजी का निर्देश सुनाते हुए कहा- माताजी हमारे गुरुजी संन्यासी हैं उनका स्त्री दर्शन न करने का व्रत है। आप इतनी दूर से आई हैं गुरुजी ने कहा है कुछ दिन ठहरें, विश्राम करें और अपनी इच्छानुसार जब चाहें अपने स्थान को जाने का कष्ट करें।

गार्गी ने मुस्कराकर कहा अच्छा ऐसे संन्यासी हैं तुम्हारे गुरुजी। तब तो मैं अवश्य ही उनके दर्शन नहीं करना चाहूँगी। अभी लौट जाऊँगी। यहां नहीं ठहरूंगी क्योंकि यहां ठहरने से संभव है मुझे उनके और उन्हें मेरे दर्शन हो जायं और उनका व्रत भंग हो। मैं ऐसा कदापि नहीं करना चाहूंगी।

शिष्यों ने लौटकर गुरुजी को बताया कि वह ठहर नहीं रहीं वापिस जाने को तैयार हैं। गुरुजी ने शिष्य को पुनः भेजा कहा कुछ दिन ठहरने का कष्ट करें। शिष्य पहुंचा। उसने निवेदन किया माताजी गुरुजी को आश्चर्य हुआ कि इतनी दूर से आकर भी आप बिना विश्राम किए तुरन्त वापस जाने को तैयार हो गईं और तनिक भी निराश नहीं हुईं। गार्गी ने इस अनुरोध को भी अनसुना कर दिया और वह तो वापस चल ही पड़ीं।

शिष्य भागा भागा गुरुजी के पास गया और कहा वे तो वापस चल पड़ीं। अब गुरुजी स्वयं उनके पीछे दौड़े और कुछ दूर जाकर उनको पुकार कर रोक लिया। पास आने पर ब्रह्मज्ञानी संन्यासी ने कहा आप तो रुष्ट हो गईं। मुझे आश्चर्य है कि सौ योजन यात्रा करके यहां आईं और फिर बिना ठहरे, बिना विश्राम किये निराशाजनक बात सुनकर भी निराश नहीं हुईं और वापस लौट पड़ीं।

गार्गी ने कहा- महाराज! मुझे यह सूचना मिली थी कि आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं। इसलिये इतनी दूर से पैदल चलकर आपसे सत्संग करने की इच्छा लेकर यहां आई थी किन्तु यहां आकर देखा कि आपका व्यवहार सच्चे ब्रह्मज्ञानियों का जैसा नहीं है इसलिये कि जो व्यक्ति ब्रह्मज्ञान रखता है वह लिंग भेद से ऊपर उठ चुका होता है क्योंकि लिंग आत्मा का चिह्न कहां है? वह तो शरीर का चिह्न है। ब्रह्मज्ञानी के लिये तो स्त्री, बालक, वृद्ध सब समान होते हैं। आप तो अभी सामान्य भेदभाव की परिधि में ही चक्कर लगा रहे हैं।

यह सुनकर गुरुजी नत मस्तक हो गये, अपने आश्रम को वापस चले गये। गार्गी अपने गन्तव्य के लिये चल ही दी थीं।

अस्तु। ब्रह्मज्ञान, तत्वज्ञान आदि मनुष्य को प्राप्त हो जाय तो वह जीवन को सार्थक ही नहीं महान् बनाकर देव ऋषि बन सकता है।

साभार- अन्तर्जाल

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss

जीवात्मा इन्द्रियों के वश होके निश्चित बड़े-बड़े दोषों को प्राप्त होता है। और जब इन्द्रियों को अपने वश करता है, तभी सिद्धि को प्राप्त होता है।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास- पृष्ठ ४८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर